वर्ष-1 , अंक-12 | बेंगलुरु, मंगलवार , 01 सितम्बर 2026 | RNI NO:KNHIN/26/A5540 | Contact:news@bhaarataarth.com | पृष्ठ – 4 ,मूल्य – 5 रुपए

दैनिक समाचार पत्र

भारतार्थ खबर

ख़बर नहीं, उसका अर्थ

देश | समाज | राजनीति | अर्थव्यवस्था | शिक्षा | संस्कृति | दुनिया

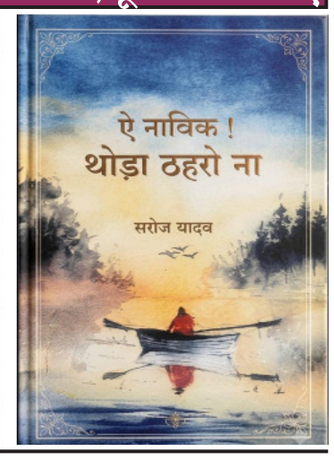

मोदी का मध्य एशिया मिशन, उज्बेकिस्तान से SCO तक

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

ताशकंद/नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मध्य एशिया यात्रा को भारत की क्षेत्रीय कूटनीति के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। 29 और 30 अगस्त को उज्बेकिस्तान की द्विपक्षीय यात्रा के बाद प्रधानमंत्री 31 अगस्त से 1 सितंबर तक किर्गिज गणराज्य की राजधानी बिश्केक में होने वाले 26वें शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेंगे।

ताशकंद पहुंचने पर गर्मजोशी से स्वागत

ताशकंद पहुंचने पर उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति शावकत मिर्जियोयेव ने प्रधानमंत्री मोदी का स्वागत किया। दोनों देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिहाज से इस यात्रा को महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

यात्रा के दौरान भारत-उज्बेकिस्तान रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने के साथ व्यापार, निवेश, सुरक्षा, ऊर्जा, संपर्क और डिजिटल सहयोग जैसे क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने पर चर्चा केंद्रित रहने की उम्मीद है। योग और संस्कृति से जुड़ाव

प्रधानमंत्री मोदी ने ताशकंद में आयोजित योग कार्यक्रम में भी भाग लिया। उज्बेकिस्तान में योग की बढ़ती स्वीकार्यता को दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक संपर्क का महत्वपूर्ण माध्यम माना जा रहा है। सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गतिविधियों के जरिए भारत तथा उज्बेकिस्तान के बीच पुराने सभ्यतागत संबंधों को भी रेखांकित किया गया। ऐसे कार्यक्रम दोनों देशों के नागरिकों के बीच आपसी समझ और संपर्क को बढ़ाने में योगदान देते हैं।

व्यापार और रणनीतिक सहयोग पर जोर

मध्य एशिया भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उज्बेकिस्तान इस क्षेत्र में भारत का एक प्रमुख साझेदार है। दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश बढ़ाने के साथ ऊर्जा, डिजिटल प्रौद्योगिकी, संपर्क और सुरक्षा सहयोग के नए अवसर तलाशने पर जोर दिया जा रहा है।

प्रधानमंत्री की यात्रा के दौरान द्विपक्षीय सहयोग की प्रगति की समीक्षा के साथ भविष्य के सहयोग की संभावनाओं पर चर्चा महत्वपूर्ण विषयों में शामिल है। अब बिश्केक में SCO शिखर सम्मेलन

उज्बेकिस्तान की यात्रा के बाद प्रधानमंत्री मोदी बिश्केक पहुंचेंगे, जहां 26वें SCO शिखर सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। सम्मेलन में क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, संपर्क और आतंकवाद सहित साझा चुनौतियों पर सदस्य देशों के बीच चर्चा होने की संभावना है।

SCO के मंच पर भारत क्षेत्रीय शांति, सुरक्षा और सहयोग को लेकर अपनी प्राथमिकताओं को सामने रख सकता है। मध्य एशिया के साथ संपर्क बढ़ाना भी भारत की व्यापक क्षेत्रीय रणनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मध्य एशिया में भारत की सक्रिय भूमिका प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा भारत की मध्य एशिया नीति में सक्रिय कूटनीतिक भागीदारी को दर्शाती है। उज्बेकिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंध और रउड जैसे बहुपक्षीय मंच भारत को क्षेत्रीय सहयोग के विस्तार के अवसर प्रदान करते हैं। इस दौरे से भारत और उज्बेकिस्तान के बीच आर्थिक तथा रणनीतिक सहयोग को नई गति मिलने के साथ मध्य एशिया में भारत की भूमिका और मजबूत होने की संभावनाएं हैं।

CJP पर वांगचुक का बड़ा बयान, बोले—राजनीति में आना गलत नहीं

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। सामाजिक कार्यकर्ता और शिक्षा सुधारक सोनम वांगचुक ने कॉकroach जनता पार्टी (CJP) से जुड़े युवाओं और उसके प्रमुख संस्थापकों की राजनीतिक संभावनाओं को लेकर महत्वपूर्ण टिप्पणी की है। उन्होंने कहा कि उनके आकलन के अनुसार उखढ से जुड़े कुछ संस्थापकों में भविष्य में राजनीति में आने की महत्वाकांक्षा हो सकती है। हालांकि, वांगचुक ने इसे किसी तरह की नकारात्मक बात नहीं बताया।

वांगचुक ने यह टिप्पणी एक पॉडकास्ट बातचीत के दौरान की। उन्होंने स्पष्ट किया कि CJP के संस्थापकों ने स्वयं उनके सामने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की घोषणा नहीं की थी। यह उनके साथ काम करने के दौरान बना व्यक्तिगत आकलन है। इसलिए इसे उखढ संस्थापकों की घोषित राजनीतिक योजना के रूप में देखना उचित नहीं होगा। राजनीति में आने की इच्छा गलत नहीं वांगचुक के अनुसार युवाओं का राजनीति में आने की इच्छा रखना स्वाभाविक है। उन्होंने कहा कि युवा यदि आगे चलकर राजनीतिक दल में शामिल होना चाहते हैं या अपना राजनीतिक संगठन बनाना चाहते हैं, तो इसमें अपने आप में कुछ गलत नहीं है। उनका जोर इस बात पर रहा कि राजनीतिक महत्वाकांक्षा और किसी मौजूदा छात्र आंदोलन की भूमिका को अलग-अलग रखा जाना चाहिए।

छात्र आंदोलन को गैर-दलीय रखने पर जोर

वांगचुक ने कहा कि जिस छात्र आंदोलन से CJP के नेता जुड़े रहे, उसकी विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए उसे राजनीतिक दलगत हितों से अलग रखना जरूरी है।

उन्होंने आंदोलन के दौरान उखढ से जुड़े नेताओं को भी यही सलाह दी थी कि यदि भविष्य में वे राजनीति में जाना चाहते हैं तो ऐसा कर सकते हैं, लेकिन छात्र मंच की पहचान और उद्देश्य को राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए।

वे संत नहीं हैं टिप्पणी का संदर्भ उखढ संस्थापकों के संदर्भ में वांगचुक ने कहा कि वे ऐसे लोग नहीं हैं जिनसे किसी भी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा की अपेक्षा न की जाए। उनके इस बयान का आशय यह था कि आंदोलन से जुड़े युवा भी सामान्य सामाजिक और राजनीतिक आकांक्षाएं रखने वाले व्यक्ति हैं।

उन्होंने साथ ही युवा नेतृत्व के राजनीति में आने को लोकतांत्रिक प्रक्रिया का स्वाभाविक हिस्सा बताया।

राजनीतिक भविष्य पर अभी कोई आधिकारिक घोषणा नहीं

वांगचुक की टिप्पणी के बावजूद उपलब्ध रिपोर्टों में CJP संस्थापकों की ओर से भविष्य में चुनाव लड़ने या औपचारिक राजनीतिक दल के रूप में आगे बढ़ने की कोई ऐसी घोषणा सामने नहीं आती, जिसे उनकी निश्चित राजनीतिक योजना माना जा सके। इसलिए वांगचुक के बयान को फिलहाल उनके व्यक्तिगत आकलन और राजनीतिक दृष्टिकोण के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

आंदोलन और राजनीति के बीच संतुलन का सवाल

वांगचुक की टिप्पणी ऐसे समय आई है जब CJP से जुड़े छात्र आंदोलन ने शिक्षा व्यवस्था और छात्रों से जुड़े मुद्दों को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान आकर्षित किया है। आंदोलन के दौरान वांगचुक ने भी उखढ नेताओं के साथ मंच साझा किया था। उनके ताजा बयान का मुख्य संदेश यही है कि युवाओं का राजनीति में प्रवेश लोकतांत्रिक व्यवस्था का सामान्य हिस्सा हो सकता है, लेकिन किसी छात्र या सामाजिक आंदोलन की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए उसके घोषित उद्देश्य और राजनीतिक गतिविधियों के बीच स्पष्ट अंतर होना चाहिए।

मॉनसून फिर तेज: ओडिशा-छत्तीसगढ़ में भारी बारिश का अलर्ट

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। देश के कई हिस्सों में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के ताजा पूवार्नुमान के अनुसार पूर्वी, मध्य और उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में आने वाले दिनों में बारिश का दौर जारी रह सकता है। कुछ इलाकों में भारी से बहुत भारी तथा अत्यंत भारी बारिश की स्थिति बनने की संभावना है। मौसम में सक्रियता की प्रमुख वजह उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी तथा उससे सटे पश्चिम बंगाल और उत्तरी ओडिशा तट के ऊपर बना अच्छी तरह से चिह्नित कम दबाव का क्षेत्र है। इसके प्रभाव से पूर्वी और मध्य भारत के कई हिस्सों में बारिश की गतिविधियां बढ़ी हैं। ओडिशा और छत्तीसगढ़ में विशेष सतर्कता IMD के अनुसार 30 अगस्त से 1 सितंबर के दौरान ओडिशा और छत्तीसगढ़ में व्यापक बारिश की संभावना है। ओडिशा में 30 और 31 अगस्त को कुछ स्थानों पर अत्यंत भारी बारिश हो सकती है, जबकि छत्तीसगढ़ में 31 अगस्त को अत्यंत भारी बारिश की आशंका जताई गई है। ओडिशा में 31 अगस्त से 1 सितंबर के दौरान गरज-चमक और तेज हवाओं की स्थिति भी बन सकती है। ऐसे मौसम में निचले इलाकों में जलभराव तथा स्थानीय स्तर पर बाढ़ जैसी स्थिति का खतरा बढ़ सकता है। झारखंड और पश्चिम बंगाल में भी बारिश का असर IMD के अनुसार गंगा के मैदानी इलाकों

वाले पश्चिम बंगाल और झारखंड में 30 और 31 अगस्त को कहीं-कहीं भारी से बहुत भारी बारिश की संभावना है। आने वाले दिनों में इन क्षेत्रों में बारिश की गतिविधियां बनी रह सकती हैं। लगातार बारिश वाले क्षेत्रों में लोगों को नदी, नाले और जलभराव वाले स्थानों के आसपास विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। उत्तर प्रदेश में भी सक्रिय रहेगा मौसम IMD के 31 अगस्त के पूवार्नुमान के अनुसार पूर्वी उत्तर प्रदेश में 31 अगस्त को कुछ स्थानों पर बहुत भारी बारिश की संभावना है। इसके अलावा पूर्वी उत्तर प्रदेश में 31 अगस्त से 5 सितंबर तक बारिश की गतिविधियां बनी रह सकती हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भी 31 अगस्त से 5 सितंबर के दौरान बारिश का दौर जारी रहने का अनुमान है। बारिश के साथ कुछ क्षेत्रों में गरज-चमक और बिजली गिरने का खतरा भी रह सकता है। ऐसे में मौसम विभाग के स्थानीय अलर्ट को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। उत्तराखंड और हिमाचल में सावधानी जरूरी पहाड़ी राज्यों में भी मौसम को लेकर सतर्कता बरतने की जरूरत है। IMD ने उत्तराखंड में 31 अगस्त और 1 सितंबर को कुछ स्थानों पर बहुत भारी बारिश की संभावना जताई है। हिमाचल प्रदेश में 31 अगस्त से 3 सितंबर के दौरान भारी बारिश का अनुमान है। तेज बारिश के दौरान पहाड़ी क्षेत्रों में भूस्खलन, अचानक जलभराव और सड़क संपर्क प्रभावित होने जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। यात्रियों को स्थानीय प्रशासन और मौसम विभाग की सलाह के अनुसार ही यात्रा की योजना बनाने की सलाह दी जाती है। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख में भी बारिश जम्मू-कश्मीर और लद्दाख सहित आसपास के पहाड़ी क्षेत्रों में भी मौसम सक्रिय रह सकता है। IMD ने 31 अगस्त से 2 सितंबर के बीच कुछ स्थानों पर भारी बारिश की संभावना जताई है। मध्य भारत में भी बारिश का दौर छत्तीसगढ़, पूर्वी मध्य प्रदेश और विदर्भ में 31 अगस्त से 5 सितंबर के बीच बारिश की गतिविधियां बनी रहने की संभावना है। पश्चिमी मध्य प्रदेश में भी 31 अगस्त से 1 सितंबर के दौरान बारिश हो सकती है, जबकि 2 से 5 सितंबर के बीच वहां बारिश का दायरा बढ़ने का अनुमान है। दिल्ली-NCR में कब बढ़ेगी बारिश? राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में 31 अगस्त से 5 सितंबर तक हरियाणा, चंडीगढ़, दिल्ली, पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्की से मध्यम बारिश की गतिविधियां देखने को मिल सकती हैं। क्टऊके अनुसार बारिश का दौर अगले कुछ दिनों में जारी रह सकता है। सितंबर की शुरूआत में भी सक्रिय रहेगा मानसून IMD के पूवार्नुमान से स्पष्ट है कि बारिश का दौर केवल 31 अगस्त तक सीमित नहीं रहने वाला है। पूर्वी और मध्य भारत के कई हिस्सों में सितंबर के शुरूआती दिनों में भी बारिश की गतिविधियां जारी रहने की संभावना है। विशेष रूप से ओडिशा, छत्तीसगढ़, पूर्वी मध्य प्रदेश, विदर्भ और उत्तर भारत के कुछ क्षेत्रों में मौसम पर नजर बनाए रखना जरूरी होगा। लोग क्या सावधानी बरतें? - भारी बारिश के दौरान निचले और जलभराव वाले क्षेत्रों में जाने से बचें। - गरज-चमक के समय खुले मैदान, ऊंचे पेड़ और बिजली के खंभों से दूरी बनाए रखें। - पहाड़ी क्षेत्रों में यात्रा से पहले स्थानीय मौसम और सड़क स्थिति की जानकारी लें। - नदी, नाले और तेज बहाव वाले पानी के पास जाने से बचें। - मौसम विभाग तथा स्थानीय प्रशासन के ताजा अलर्ट पर लगातार नजर रखें। - अत्यधिक बारिश की स्थिति में अनावश्यक यात्रा से बचना अधिक सुरक्षित है। मौसम विभाग की चेतावनी का सार मॉनसून की सक्रियता के बीच देश के कई हिस्सों में बारिश का दौर जारी रहने का अनुमान है। हालांकि हर जिले में बारिश की तीव्रता समान नहीं होगी। इसलिए सामान्य पूवार्नुमान के बजाय संबंधित जिले के स्थानीय क्टऊ अलर्ट को प्राथमिकता देना जरूरी है।

राहुल गांधी पर FIR से कांग्रेस का हमला

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। कांग्रेस महासचिव के.सी. वेणुगोपाल ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी के खिलाफ उत्तराखंड में एफआईआर दर्ज किए जाने को लेकर भारतीय जनता पार्टी और राज्य प्रशासन पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि दलित अत्याचार और सामाजिक न्याय के मुद्दे पर आवाज उठाने वालों को निशाना बनाया जा रहा है। के.सी. वेणुगोपाल ने अपने बयान में कहा कि लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की प्रेस कॉन्फ्रेंस के अगले दिन उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज किया जाना गंभीर सवाल खड़े करता है। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के कथित अपमान और उससे जुड़े मामले में कार्रवाई की मांग उठाई थी। इसके बाद उत्तराखंड पुलिस द्वारा राहुल गांधी के खिलाफ एफआईआर दर्ज किए जाने को कांग्रेस ने राजनीतिक कार्रवाई करार दिया है। सामाजिक न्याय के मुद्दे पर कांग्रेस का विरोध वेणुगोपाल ने भाजपा पर सामाजिक न्याय के संवैधानिक मूल्यों के खिलाफ काम करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस इस मुद्दे को गंभीरता से उठाएगी और खड़गे के कथित अपमान के जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग जारी रखेगी। कांग्रेस महासचिव ने यह भी आरोप लगाया कि दलित समुदाय के खिलाफ होने वाले अत्याचारों और कथित जातिगत भेदभाव के मामलों पर आवाज उठाने वाले नेताओं को दबाने का प्रयास किया जा रहा है। हालांकि, भाजपा अथवा उत्तराखंड पुलिस की ओर से वेणुगोपाल के इन आरोपों पर विस्तृत आधिकारिक प्रतिक्रिया का उल्लेख इस बयान में उपलब्ध नहीं है। राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज FIR वापस लेने की मांग

कांग्रेस ने राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज एफआईआर को वापस लेने की मांग की है। पार्टी का कहना है कि वह इस मामले को राजनीतिक और कानूनी दोनों स्तरों पर उठाएगी।

वेणुगोपाल ने कहा कि कांग्रेस तब तक अपनी आवाज बुलंद करती रहेगी, जब तक खड़गे के कथित अपमान के मामले में जिम्मेदार लोगों के खिलाफ कार्रवाई नहीं होती और राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज एफआईआर को समाप्त नहीं किया जाता।

देशभर में प्रदर्शन का ऐलान

कांग्रेस ने रविवार शाम देशभर में विरोध प्रदर्शन करने की घोषणा की है। पार्टी कार्यकर्ता विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन कर भाजपा नेताओं के खिलाफ कार्रवाई की मांग करेंगे।

एक देश, एक समय: मार्च 2027 से IST होगा आधिकारिक मानक

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। भारत में समय को लेकर केंद्र सरकार ने बड़ा कदम उठाया है। उपभोक्ता मामलों के विभाग ने Legal Metrology (Indian Standard Time) Rules, 2026 को 27 अगस्त 2026 को अधिसूचित कर दिया है। नए नियमों के तहत इंडियन स्टैंडर्ड टाइम (IST) को देशभर में कानूनी, प्रशासनिक, वाणिज्यिक और अन्य आधिकारिक कार्यों के लिए सामान्य समय-संदर्भ बनाया जाएगा। नियम आधिकारिक राजपत्र में प्रकाशित होने के 180 दिन बाद प्रभावी होंगे। ऐसे में इनके मार्च 2027 के आसपास लागू होने की संभावना है। हालांकि, अंतिम प्रभावी तिथि राजपत्र में प्रकाशन की तारीख के आधार पर तय होगी। क्या है वन नेशन, वन टाइम पहल? सरकार की इस पहल का उद्देश्य देश में समय के लिए एक समान, सटीक और भरोसेमंद राष्ट्रीय संदर्भ स्थापित करना है। डिजिटल अर्थव्यवस्था के विस्तार के साथ बैंकिंग, डिजिटल भुगतान, दूरसंचार, रेलवे, बिजली व्यवस्था, कंप्यूटर नेटवर्क और सरकारी रिकॉर्ड जैसे क्षेत्रों में सटीक टाइम-स्टैम्प का महत्व लगातार बढ़ा है। सरकार के अनुसार अलग-अलग समय स्त्रोतों के कारण होने वाली असंगतियों को कम करने और महत्वपूर्ण प्रणालियों के लिए

भारतीय समय-संदर्भ को मजबूत बनाने में यह व्यवस्था मदद करेगी। 180 दिन का संक्रमण काल नियमों को तत्काल लागू करने के बजाय सरकार ने 180 दिन का समय दिया है। इस अवधि में सरकारी विभागों, कारोबारियों, संस्थानों और अन्य संबंधित संगठनों को अपने मौजूदा सिस्टम की समीक्षा करने तथा आवश्यक तकनीकी बदलाव करने का अवसर मिलेगा। इसमें सर्वर, नेटवर्क, टाइम-सिंक प्रणाली और डिजिटल ढांचे को आधिकारिक भारतीय समय-संदर्भ के अनुरूप तैयार करना शामिल हो सकता है। IST का आधिकारिक आधार क्या होगा?

इसका उद्देश्य केवल घड़ियों को एक जैसा दिखाना नहीं, बल्कि देश में समय की सटीकता, ट्रेसेबिलिटी, सिंक्रोनाइजेशन और विश्वसनीयता के लिए एक मजबूत राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करना है। बैंकिंग और डिजिटल भुगतान में फायदा आज लगभग हर डिजिटल वित्तीय लेन-देन के साथ समय का रिकॉर्ड जुड़ा होता है। करोड़ों लेन-देन वाले बैंकिंग और डिजिटल भुगतान तंत्र में सटीक और समान टाइम-स्टैम्प रिकॉर्ड के मिलान तथा तकनीकी जांच में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक सामान्य राष्ट्रीय टाइम रेफरेंस ऐसे समय-निर्भर सिस्टम में समन्वय और रिकॉर्ड की एकरूपता को बेहतर बनाने में सहायक हो सकता है। टेलीकॉम, बिजली और परिवहन क्षेत्र भी होंगे लाभान्वित आधुनिक दूरसंचार नेटवर्क, बिजली प्रणालियां और परिवहन व्यवस्था भी सटीक समय-सिंक्रोनाइजेशन पर निर्भर करती हैं। सरकार की योजना के तहत भारतीय मानक समय के सुरक्षित और सटीक प्रसार के लिए राष्ट्रीय टाइम-डिसेमिनेशन व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है। इससे बैंकिंग एवं वित्तीय बाजार, दूरसंचार, पावर सिस्टम, परिवहन और डिजिटल गवर्नेंस जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों को विश्वसनीय भारतीय टाइम रेफरेंस उपलब्ध कराने में मदद मिल सकती है। सरकार के अनुसार RRSL बेंगलुरु और NSE चेन्नई के बीच भी White Rabbit Technology के माध्यम से IST के सुरक्षित प्रसार का सत्यापन किया गया। इसमें CSIR-NPL, ISRO, SEBI, NSE, BSNL और अन्य संबंधित संस्थाओं ने सहयोग किया। विदेशी टाइम सोर्स पर निर्भरता घटाने की दिशा सरकार का कहना है कि भारत में स्वदेशी टाइम-डिसेमिनेशन ढांचे को मजबूत करने से महत्वपूर्ण प्रणालियों के लिए बाहरी टाइम स्त्रोतों पर निर्भरता कम करने के अतिरिक्त विकल्प उपलब्ध होंगे। इसका उद्देश्य किसी विदेशी समय प्रणाली को अचानक बंद करना नहीं, बल्कि भारत के पास अपना अधिक मजबूत, सुरक्षित और ट्रेसेबल राष्ट्रीय टाइम इंफ्रास्ट्रक्चर उपलब्ध कराना है। आम लोगों पर क्या पड़ेगा असर? आम नागरिकों के लिए यह किसी नई घड़ी या अलग समय क्षेत्र की शुरूआत नहीं है।

न्यूयॉर्क से भागवत का संदेश: विविधता ही भारत की ताकत

भारतार्थ खबर अशोक कुमार सिंह
Bhaarataarth.com

न्यूयॉर्क /नई दिल्ली, 31 अगस्त 2026। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सरसंघचालक मोहन भागवत ने न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित Universal Oneness Celebration कार्यक्रम में विविधता, सामाजिक सद्भाव और मानव एकता को लेकर अपना संदेश दिया। उन्होंने भारत की सांस्कृतिक परंपरा को विभिन्न धर्मों, भाषाओं और जीवन-पद्धतियों के बीच सह-अस्तित्व तथा एकता का उदाहरण बताया।

विविधता को बताया भारत की शक्ति

भागवत ने कहा कि भारत की पहचान उसकी विविधता में निहित है। देश में अलग-अलग आस्थाओं, भाषाओं, परंपराओं और विचारधाराओं के बावजूद एक साथ रहने की भावना भारतीय समाज की महत्वपूर्ण विशेषता रही है।

उन्होंने विविधता को विभाजन का कारण मानने के बजाय समाज की शक्ति के रूप में देखने पर जोर दिया। उनके अनुसार, अलग-अलग विचारों और मान्यताओं के बीच संवाद, परस्पर सम्मान और सहयोग के माध्यम से सामाजिक एकता को मजबूत किया जा सकता है। विश्व के लिए भारत के अनुभव का उल्लेख

कार्यक्रम में भागवत ने भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभव को व्यापक वैश्विक संदर्भ से जोड़ते हुए शांति और सहयोग के लिए संवाद को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ और सम्मान बढ़ने से सामाजिक दूरी कम की जा सकती है। उनके संबोधन में यह विचार प्रमुख रहा कि दुनिया के विभिन्न समाज अपनी विविधताओं को स्वीकार करते हुए साझा मानवीय मूल्यों के आधार पर आगे बढ़ सकते हैं।

धार्मिक सद्भाव और सह-अस्तित्व पर जोर

कार्यक्रम के दौरान धार्मिक विविधता और आपसी सम्मान का विषय भी प्रमुखता से सामने आया। भागवत ने समावेशी दृष्टिकोण तथा सह-अस्तित्व की भावना को सामाजिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने विभिन्न समुदायों के बीच विश्वास और संवाद बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा सामाजिक सद्भाव को मजबूत करने में नागरिकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय से भी संवाद न्यूयॉर्क में उपस्थित भारतीय मूल के लोगों से संवाद करते हुए भागवत ने विदेशों में रहने वाले भारतीयों को स्थानीय समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करने का संदेश दिया।

उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को जीवन में बनाए रखते हुए जिस समाज में भारतीय रहते हैं, उसके विकास में सकारात्मक योगदान देने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। सेवा और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश भागवत के संबोधन में सेवा और मानवता के प्रति जिम्मेदारी का विषय भी महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए व्यक्तिगत सहभागिता को आवश्यक बताया। उन्होंने इस विचार को रेखांकित किया कि मजबूत समाज के निर्माण में केवल सरकारों और संस्थाओं की ही नहीं, बल्कि आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी महत्वपूर्ण होती है। कार्यक्रम में एकता का संदेश मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित इस कार्यक्रम में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के साथ विभिन्न सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि से जुड़े लोगों की सहभागिता रही। आयोजन के माध्यम से एकता, संवाद, सामाजिक सद्भाव और सहयोग का संदेश सामने आया। मोहन भागवत के संबोधन का केंद्रीय भाव यही रहा कि अलग-अलग पहचान, आस्था और विचारों के बावजूद परस्पर सम्मान तथा सहयोग के साथ मानव समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर बढ़ती सामाजिक विविधता के बीच यह संदेश संवाद और सह-अस्तित्व की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

सम्पादकीय

प्रकृति की चेतावनी को कब सुनेंगे हम?

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

हिमालय की गोद में आई विनाशकारी बाढ़, नेपाल में लगातार बढ़ती मानवीय त्रासदी और भारत में मानसून की बदलती चाल–ये अलग-अलग घटनाएं नहीं हैं। ये प्रकृति की उस गंभीर चेतावनी के संकेत हैं, जिन्हें मानव समाज लंबे समय से सुनकर भी अनसुना करता आया है। 31 अगस्त को उपलब्ध ताजा सूचनाओं के अनुसार, नेपाल में आई भीषण आकस्मिक बाढ़ ने भारी जनहानि और व्यापक तबाही मचाई है। राहत एवं बचाव कार्य जारी हैं और प्रभावित क्षेत्रों में हजारों लोगों के जीवन पर संकट बना हुआ है। भारत से भी राहत एवं सहायता प्रयासों की खबरें सामने आई हैं। हालांकि आपदा से जुड़े आंकड़े लगातार बदल रहे हैं और अंतिम स्थिति आधिकारिक बचाव एजेंसियों के सत्यापन के बाद ही स्पष्ट होगी। दूसरी ओर, भारत के लिए भी मौसम की तस्वीर चिंता पैदा करने वाली है। अगस्त में सामान्य से कम वर्षा के बाद सितंबर में भी औसत से कम बारिश की संभावना जताई गई है। यदि यह स्थिति बनी रहती है तो कृषि उत्पादन, ग्रामीण अर्थव्यवस्था, जल भंडारण और खाद्य कीमतों पर इसका प्रभाव पड़ सकता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए मानसून केवल मौसम की घटना नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों की आजीविका का आधार है। आपदा केवल प्राकृतिक नहीं होती हर बाढ़, हर भूस्खलन और हर सूखे को केवल प्राकृतिक आपदा कहकर अपनी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। प्रश्न यह भी है कि क्या हमने पहाड़ों की वहन क्षमता का पर्याप्त सम्मान किया? क्या नदियों के प्राकृतिक मार्ग सुरक्षित रखे गए? क्या अनियोजित निर्माण, अंधाधुंध कटाई और कमजोर पर्यावरणीय निगरानी ने जोखिम को बढ़ाया? विकास आवश्यक है, लेकिन विकास और विनाश के बीच एक महीन रेखा होती है। सड़कें चाहिए, बिजली परियोजनाएं चाहिए, पर्यटन चाहिए और आधुनिक बुनियादी ढांचा भी चाहिए। मगर यह सब प्रकृति के नियमों को चुनौती देकर नहीं किया जा सकता। हिमालय कोई साधारण भूभाग नहीं है। यह भूगर्भीय दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्र है और यहां विकास की प्रत्येक परियोजना को वैज्ञानिक अध्ययन, स्थानीय परिस्थितियों और दीर्घकालिक पर्यावरणीय प्रभावों के आधार पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए। जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की बात नहीं कभी अत्यधिक बारिश और कभी लंबे समय तक सूखा–मौसम की यह असामान्य प्रवृत्ति केवल वैज्ञानिक रिपोर्टों तक सीमित नहीं रह गई है। इसका प्रभाव अब खेतों, घरों, बाजारों और आम नागरिकों की रोजमर्रा की जिंदगी में दिखाई देने लगा है। आज सबसे बड़ी चुनौती केवल यह नहीं है कि तापमान कितना बढ़ रहा है। वास्तविक चुनौती यह है कि बदलते मौसम के सामने हमारी तैयारी कितनी मजबूत है। क्या हमारे शहर अचानक होने वाली भारी वर्षा को संभालने के लिए तैयार हैं? क्या पहाड़ी क्षेत्रों में समय रहते चेतावनी पहुंचाने की पर्याप्त व्यवस्था है? क्या ग्रामीण क्षेत्रों के किसानों को मौसम की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप वैज्ञानिक सलाह और सुरक्षा मिल रही है? इन प्रश्नों के उत्तर केवल सरकारी घोषणाओं से नहीं, बल्कि जमीन पर दिखाई देने वाली तैयारियों से मिलने चाहिए। आपदा प्रबंधन नहीं, आपदा से पहले की तैयारी जरूरी भारत और दक्षिण एशिया को अब राहत-केंद्रित व्यवस्था से आगे बढ़कर पूर्व चेतावनी और जोखिम न्यूनीकरण आधारित नीति अपनानी होगी। अधिक महत्वपूर्ण है कि समय रहते लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया जाए। इसके लिए मौसम विज्ञान, उपग्रह तकनीक, स्थानीय प्रशासन, वैज्ञानिक संस्थानों और ग्रामीण समुदायों के बीच मजबूत समन्वय की जरूरत है। हिमालयी क्षेत्रों में ग्लेशियरों, नदियों और संवेदनशील पर्वतीय ढलानों की निरंतर वैज्ञानिक निगरानी को प्राथमिकता देनी होगी। वहीं शहरों में जल निकासी व्यवस्था, जलाशयों की सुरक्षा और अतिक्रमण नियंत्रण को केवल कागजी योजनाओं तक सीमित नहीं रखा जा सकता। राजनीति से ऊपर उठकर पर्यावरण की नीति बने प्राकृतिक आपदाओं का सबसे दुखद पक्ष यह है कि इनका सबसे अधिक भार अक्सर गरीब और कमजोर वर्गों पर पड़ता है। जिनके पास सुरक्षित घर नहीं हैं, जिनकी आजीविका खेती या दैनिक श्रम पर निर्भर है और जिनके पास आपदा के बाद फिर से जीवन शुरू करने के संसाधन सीमित हैं–वे सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इसलिए जलवायु और पर्यावरण का प्रश्न किसी एक सरकार, दल या देश का मुद्दा नहीं है। यह मानवता की साझा चुनौती है। आज आवश्यकता है कि सरकारें राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर जलवायु अनुकूल विकास की साझा नीति तैयार करें। विकास परियोजनाओं में पर्यावरणीय सुरक्षा को बाधा नहीं, बल्कि अनिवार्य निवेश माना जाए। अब चेतना का समय है नेपाल की त्रासदी और भारत में मानसून की अनिश्चितता हमें एक साथ कई संदेश दे रही है। प्रकृति के साथ संघर्ष की नीति अंततः मानव समाज को ही महंगी पड़ती है। विकास की रफ्तार महत्वपूर्ण है, लेकिन विकास की दिशा उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। हमें यह तय करना होगा कि आने वाली पीढ़ियों को हम केवल ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें और विशाल परियोजनाएं देना चाहते हैं या सुरक्षित नदियां, संरक्षित पर्वत, स्वच्छ हवा और रहने योग्य धरती भी। प्रकृति हर बार चेतावनी देकर नहीं रुकेगी। अब समय है कि हम आपदा के बाद शोक मनाने की बजाय, आपदा से पहले चेत जाएं।

वचन की मयार्दा ही चरित्र की असली पहचान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

वचन देना आसान है, लेकिन उस वचन को परिस्थितियां बदलने के बाद भी निभाना ही व्यक्ति के चरित्र की वास्तविक परीक्षा है। शब्द बोलना सरल है, पर उन शब्दों के प्रति जीवनभर ईमानदार रहना कठिन।

आज के सार्वजनिक जीवन में सत्य, धर्म, सनातन और मयार्दा जैसे शब्द अक्सर सुनाई देते हैं। लेकिन इन मूल्यों की वास्तविक कसौटी तब सामने आती है, जब व्यक्ति के सामने व्यक्तिगत हित और सिद्धांत के बीच चुनाव करने की स्थिति आती है। राम केवल नाम नहीं, आचरण का आदर्श हैं

भगवान राम का जीवन भारतीय परंपरा में सत्य, त्याग, कर्तव्य और वचनपालन के आदर्श के रूप में देखा जाता है। राम का अनुयायी होने का अर्थ केवल उनके नाम का स्मरण करना या धार्मिक प्रतीकों को धारण करना नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को अपने व्यवहार में उतारने का प्रयास करना है। रामकथा का सबसे महत्वपूर्ण संदेश यही है कि कठिन परिस्थितियों में भी धर्म और सत्य का साथ नहीं छोड़ा जाना चाहिए। आज के समय में इस आदर्श की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। किसी भी व्यक्ति के लिए यह आत्ममंथन का विषय होना चाहिए कि वह जिन मूल्यों की बात सार्वजनिक रूप से करता है, क्या उन्हें अपने निजी और सार्वजनिक जीवन में भी उतनी ही गंभीरता से अपनाता है? राजनीति में सिद्धांतों की परीक्षा राजनीति लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। यहां विचारों में मतभेद स्वाभाविक हैं। अलग-अलग राजनीतिक दल और नेता देश तथा समाज के लिए अलग-अलग नीतियां और दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। असहमति लोकतंत्र की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी स्वाभाविक विशेषता है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब सिद्धांतों का उपयोग केवल सुविधा के अनुसार किया जाने लगे। सत्ता और पद स्थायी नहीं होते। राजनीतिक परिस्थितियां बदलती रहती हैं। लेकिन व्यक्ति की वाणी, निर्णय और आचरण से बनी उसकी सार्वजनिक छवि लंबे समय तक समाज की स्मृति में रहती है।

सत्य का कोई राजनीतिक रंग नहीं सत्य को किसी दल, विचारधारा या व्यक्ति की संपत्ति नहीं बनाया जा सकता। सत्य वही रहता है, चाहे उसे कहने वाला सत्ता में हो या विपक्ष में।

इसी प्रकार गलत को केवल इसलिए सही नहीं कहा जा सकता कि उससे हमारा व्यक्तिगत या राजनीतिक हित जुड़ा हुआ है। लोकतांत्रिक समाज में स्वस्थ बहस के लिए आवश्यक है कि हम अपने विचारों के साथ-साथ अपने विरोधी के दृष्टिकोण को भी सुनने का धैर्य रखें। तर्क का उद्देश्य सत्य तक पहुंचना होना चाहिए, न कि हर कीमत पर अपनी बात को सही सिद्ध करना। मयार्दा की शुरूआत स्वयं से समाज में बदलाव की शुरूआत दूसरों से नहीं, स्वयं से होती है। यदि हम चाहते हैं कि राजनीति में वचन का सम्मान हो, तो हमें अपने जीवन में भी अपने शब्दों के प्रति ईमानदार होना होगा। यदि हम सत्य की अपेक्षा करते हैं, तो हमें सुविधा के समय नहीं, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ देना होगा। धार्मिक आदर्श तभी सार्थक होते हैं, जब वे हमारे व्यवहार में दिखाई दें। आज का संदेश वचन सोच-समझकर दीजिए और एक बार दे दिया जाए तो उसे निभाने का प्रयास कीजिए। धर्म की बात केवल शब्दों में नहीं, व्यवहार में कीजिए। राजनीतिक मतभेद रखिए, लेकिन व्यक्तिगत वैमनस्य को स्थान मत दीजिए। सत्य को अपने हित के अनुसार बदलने के बजाय अपने हित को सत्य और न्याय के अनुरूप बदलने का साहस रखिए। क्योंकि पद व्यक्ति को ऊंचाई दे सकता है, लेकिन चरित्र ही उसे सम्मान देता है। राम का नाम लेना सरल है, लेकिन राम के आदर्शों पर चलना कठिन। इसी कठिन मार्ग पर चलने का प्रयास ही मयार्दा की वास्तविक साधना है। वचन की दृढ़ता, विचारों की शुचिता और आचरण की मयार्दा–यही किसी भी व्यक्ति के चरित्र की सबसे बड़ी पहचान है।

संवेदनाओं का काव्य-गुलदस्ता: ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना

पुस्तक समीक्षा मानवीय मूल्यों, नारी चेतना और सामाजिक सरोकारों से सजी काव्य-कृति

पुस्तक : ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना
कवयित्री : श्रीमती सरोज यादव
समीक्षक : लालबहादुर चौरसिया लाल

हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा में काव्य केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि जीवन की अनुभूतियों, संवेदनाओं और सामाजिक सरोकारों की अभिव्यक्ति भी है। आजमगढ़ की प्रतिष्ठित कवयित्री श्रीमती सरोज यादव का काव्य-संग्रह ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना इसी भावभूमि पर रचित एक ऐसी कृति के रूप में सामने आता है, जिसमें प्रकृति, मातृभूमि, नारी चेतना, प्रेम, सामाजिक विषमताएं और मानवीय मूल्य अनेक रंगों के साथ अभिव्यक्त हुए हैं। समीक्षक लालबहादुर चौरसिया लाल के अनुसार यह काव्य-संग्रह विविध भावों और अनुभूतियों से सजा एक ऐसा साहित्यिक गुलदस्ता है, जिसमें लोकमंगल, लोकरंजन और मानवीय संवेदनाओं की सुगंध अनुभव की जा सकती है। संग्रह की रचनाएं पाठक को केवल भाव-विभोर ही नहीं करतीं, बल्कि समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर विचार करने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

मातृभूमि के प्रति समर्पण

काव्य-संग्रह में कवयित्री का मातृभूमि प्रेम विशेष रूप से उभरकर सामने आता है। राष्ट्र और जन्मभूमि के प्रति उनकी भावनाओं में आत्मीयता तथा समर्पण का स्वर दिखाई देता है–

जग की जो सुंदरतम रचना,
जो स्वर्गलोक से न्यारी है।
वह है मेरी मातृभूमि,
मुझको प्राणों से प्यारी है।।

इन पंक्तियों में मातृभूमि के प्रति प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव का सहज चित्र उपस्थित होता है।

समाज के सरोकारों को स्वर

कवयित्री सरोज यादव की रचनाओं का संसार केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों तक सीमित नहीं दिखाई देता। मातृभूमि और प्रकृति के साथ-साथ नारी जीवन, प्रेम, गरीबी, भुखमरी और श्रमजीवी वर्ग की पीड़ा जैसे विषयों को भी उनकी कविताओं में स्थान मिला है।

समीक्षक के अनुसार कवयित्री ने सामाजिक विसंगतियों को सीधे और निर्भीक स्वर में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। उनकी रचनाओं में समाज के उन प्रश्नों को भी उठाया गया है, जिन पर संवेदनशील दृष्टि और आत्ममंथन की आवश्यकता है।

नारी चेतना का मुखर स्वर

इस काव्य-संग्रह की एक प्रमुख विशेषता नारी चेतना है। एक महिला रचनाकार के रूप में सरोज यादव ने स्त्री जीवन की संवेदनाओं, संघर्षों और आत्मसम्मान को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्ति दी है। कब तक अबला अभी कहेगा शीर्षक रचना में नारी की स्थिति और उसके मौन संघर्षों पर प्रश्न उठाया गया

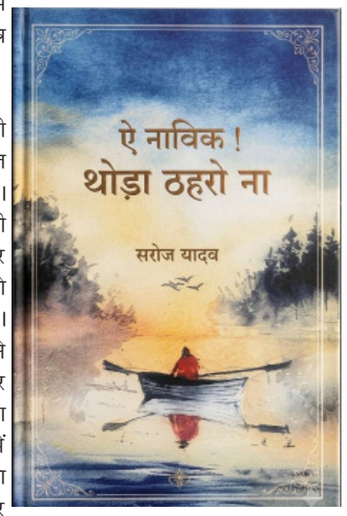

है– कब तक अबला अभी कहेगा, नारी तुमको यह संसार। दीवारों में दबी रहेगी, कब तक तेरी चीख-पुकार।। इसी प्रकार नारी तुम शक्ति स्वरूपा हो में कवयित्री स्त्री को उसकी शक्ति और आत्मविश्वास का स्मरण कराती हैं– नारी तुम शक्ति स्वरूपा हो, कमजोर नहीं खुद को मानो, तुझसे अस्तित्व मिला जग को, ना और डरो, निर्भय हो जाओ।। इन रचनाओं के माध्यम से कवयित्री नारी को भय और हीनभावना से मुक्त होकर अपने सामर्थ्य को पहचानने का संदेश देती हैं। उनके काव्य में स्त्री केवल करुणा और संवेदना की प्रतीक नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, साहस और शक्ति का स्वरूप भी है।

साहित्यिक परंपरा और आधुनिक चेतना का संगम

समीक्षक ने कवयित्री की नारी चेतना को हिंदी साहित्य की उन सशक्त परंपराओं से जोड़कर देखा है, जहां स्त्री के सम्मान, संवेदना और शक्ति को विशेष महत्व दिया गया। उनके अनुसार सरोज यादव की रचनाओं में भक्ति, संवेदना और सामाजिक चेतना के साथ अधिकार-बोध का स्वर भी दिखाई देता है।

कवयित्री के साहित्य में एकता, धैर्य, संतोष और सामाजिक समरसता के भाव भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। यह दृष्टि उनके काव्य को केवल व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित न रखकर व्यापक सामाजिक धरातल प्रदान करती है। शीर्षक में छिपी संवेदना और प्रतीकात्मकता

ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना शीर्षक अपने आप में एक भावपूर्ण याचना और प्रतीकात्मकता लिए हुए है। शीर्षक पढ़ते ही जीवन की यात्रा, उसके किनारे और मंजिलों के बीच ठहरकर आत्मचिंतन करने की अनुभूति जागृत होती है। समीक्षक के अनुसार शीर्षक में आग्रह तो है, लेकिन उसमें किसी प्रकार का कठोर आग्रह नहीं है। नाविक को संबोधित यह विनम्र पुकार कवयित्री के कोमल और संवेदनशील मन की अभिव्यक्ति प्रतीत होती है। यह शीर्षक जीवन की उस यात्रा का प्रतीक भी माना जा सकता है, जिसमें मनुष्य निरंतर आगे बढ़ते हुए कभी-कभी ठहरकर अपने रास्ते, अनुभवों और मंजिलों पर विचार करना चाहता है।

साधना से जन्म लेता है साहित्य

साहित्य सृजन को लेकर समीक्षक का मानना है कि एक-दो रचनाओं से किसी रचनाकार की संपूर्ण पहचान नहीं बनती। कविता के लिए निरंतर साधना, चिंतन और जीवनानुभव आवश्यक होते हैं।

किसी पुस्तक का प्रकाशन केवल कुछ दिनों की प्रक्रिया नहीं, बल्कि वर्षों की अनुभूतियों, अध्ययन, चिंतन और साहित्यिक साधना का परिणाम होता है। इसी दृष्टि से ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना कवयित्री सरोज यादव की साहित्यिक यात्रा और संवेदनात्मक अनुभवों का एक महत्वपूर्ण पड़ाव प्रतीत होती है।

पाठकों के लिए संवेदना और चिंतन का आमंत्रण

कुल मिलाकर, ऐ नाविक! थोड़ा ठहरो ना एक ऐसा काव्य-संग्रह है, जिसमें मानवीय संवेदनाएं, सामाजिक सरोकार, नारी चेतना, राष्ट्रप्रेम और जीवन के विविध अनुभवों को स्वर देने का प्रयास किया गया है। कवयित्री सरोज यादव की रचनाएं पाठक को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने के साथ-साथ समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर चिंतन के लिए भी प्रेरित करती हैं। संग्रह का शीर्षक और उसकी विषयवस्तु जीवन-यात्रा के बीच संवेदना, आत्ममंथन और मानवीय मूल्यों को बचाए रखने का संदेश देती प्रतीत होती है।

समीक्षक लालबहादुर चौरसिया लाल ने कवयित्री के उज्ज्वल साहित्यिक भविष्य की कामना करते हुए विश्वास व्यक्त किया है कि यह काव्य-संग्रह हिंदी साहित्य जगत में अपनी सार्थक पहचान स्थापित करेगा।
– लालबहादुर चौरसिया लाल महामंत्री, विश्व हिंदी शोध एवं संवर्धन अकादमी, आजमगढ़ इकाई

कजली तीज: आस्था, सुहाग और राजस्थान की लोकसंस्कृति का उत्सव

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

सावन-भादो की हरियाली में सजे रिश्ते, लोकगीतों में गूंजे मंगल भाव

भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया से जुड़ा कजरी अथवा कजली तीज पर्व भारतीय लोकजीवन में आस्था, पारिवारिक मंगलकामना और प्रकृति के उल्लास का सुंदर संगम प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से राजस्थान और उत्तर भारत के कई क्षेत्रों में इस पर्व की अपनी विशिष्ट लोकपरंपराएं हैं। राजस्थान में बूंदी की कजली तीज अपनी अलग पहचान रखती है। राजस्थान पर्यटन विभाग के अनुसार बूंदी की कजली तीज 2026 में 31 अगस्त और 1 सितंबर को आयोजित हो रही है। यह उत्सव बूंदी की विशिष्ट सांस्कृतिक परंपरा के रूप में दर्ज है।

श्रद्धा और सुहाग की मंगलकामना

कजली तीज महिलाओं के लिए विशेष धार्मिक और सामाजिक महत्व रखती है। विवाहित महिलाएं वैवाहिक सुख, पति की दीर्घायु और परिवार की समृद्धि की कामना के साथ व्रत एवं पूजा करती हैं। धार्मिक परंपरा में इस पर्व को भगवान शिव और माता पार्वती के दांपत्य जीवन से जोड़ा जाता है।

अविवाहित युवतियां भी अच्छे जीवनसाथी की कामना से इस पर्व में श्रद्धापूर्वक भाग लेती हैं। मेहंदी, पारंपरिक परिधान, चूड़ियां, लोकगीत और झूले इस उत्सव के सांस्कृतिक रंग को और गहरा करते हैं। राजस्थान पर्यटन के अनुसार तीज पर्व वर्षा ऋतु, हरियाली, सामाजिक मेल-मिलाप और लोकपरंपराओं से जुड़ा है। महिलाओं द्वारा गीत गाने, मेहंदी लगाने और झूलों का आनंद लेने की परंपरा इसके प्रमुख आकर्षणों में शामिल है।

बूंदी में कजली तीज की अलग पहचान

हाड़ौती अंचल की ऐतिहासिक नगरी बूंदी में कजली तीज का उत्सव अन्य स्थानों की तीज परंपराओं से अलग स्वरूप रखता है। बूंदी जिला प्रशासन के अनुसार यहां कजली तीज का आयोजन लंबे समय तक चलने वाले उत्सव के रूप में होता है और देवी उमा की आराधना की जाती है।

राजस्थान पर्यटन के अनुसार बूंदी की कजली तीज में सुसज्जित पालकी में तीज माता की शोभायात्रा निकाली जाती है। लोक कलाकारों, पारंपरिक वेशभूषा और मेले की गतिविधियों के कारण यह आयोजन धार्मिक उत्सव के साथ-साथ क्षेत्र की लोकसंस्कृति का महत्वपूर्ण परिचायक बन जाता है। लोककला और बाजार में उत्सव का रंग

कजली तीज केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं रहती। बूंदी में इसके साथ लोककला, हस्तशिल्प और पारंपरिक बाजारों की रौनक भी दिखाई देती है। राजस्थान पर्यटन के विवरण में पारंपरिक हस्तशिल्प, चूड़ियां, चित्रकला और स्थानीय वस्तुओं को मेले के आकर्षणों में शामिल बताया गया है। बारिश से धुली बूंदी की गलियां, रंग-बिरंगे पारंपरिक परिधान, लोकगीतों की स्वर-लहरियां और सजाए गए बाजार मिलकर ऐसा वातावरण बनाते हैं, जिसमें धर्म और लोकजीवन एक-दूसरे के करीब दिखाई देते हैं।

परंपरा में प्रकृति का स्पर्श

भारतीय तीज परंपराओं की सबसे खूबसूरत विशेषताओं में प्रकृति से उनका गहरा संबंध है। वर्षा ऋतु के आगमन के साथ धरती का हराभरा होना, पेड़ों पर झूले पड़ना और लोकगीतों का गूंजना ग्रामीण एवं पारंपरिक जीवन की जीवंत तस्वीर प्रस्तुत करता है।

इस दृष्टि से कजली तीज केवल व्रत और पूजा का अवसर नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति भारतीय समाज की भावनात्मक निकटता का भी उत्सव है। आस्था के साथ सांस्कृतिक विरासत

कजली तीज से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं माता पार्वती की तपस्या और भगवान शिव से उनके विवाह की कथा से जुड़ी हैं। श्रद्धालु इस कथा को दांपत्य निष्ठा, तप, समर्पण और आस्था के प्रतीक के रूप में देखते हैं। वहीं, बूंदी की कजली तीज ने धार्मिक विश्वास के साथ स्थानीय इतिहास और लोकसंस्कृति को भी अपने भीतर समेट लिया है। यही कारण है कि यह पर्व केवल धार्मिक आयोजन न रहकर क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बन गया है।

लोककथा और इतिहास में अंतर जरूरी बूंदी की कजली तीज की उत्पत्ति से जुड़ी कुछ लोककथाएं भी प्रचलित हैं। इनमें बूंदी के राजा द्वारा जयपुर की तीज परंपरा से प्रभावित होकर तीज माता की प्रतिमा बूंदी लाने और बाद में यहां भव्य तीज सवारी की परंपरा विकसित होने की कथा कही जाती है।

ऐसी कथाओं को प्रचलित लोकपरंपरा के रूप में देखना अधिक उचित है। जब तक किसी दावे के समर्थन में ठोस ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध न हों, उसे निश्चित इतिहास के रूप में प्रस्तुत करना पत्रकारिता की दृष्टि से उचित नहीं माना जा सकता। नारी आस्था और लोकजीवन का उत्सव

कजली तीज का सबसे सुंदर पक्ष यह है कि इसमें धार्मिक आस्था के साथ महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक भागीदारी भी दिखाई देती है। यह पर्व परिवार के मंगल, दांपत्य जीवन की सुख-शांति और जीवन में प्रेम तथा विश्वास की कामना का अवसर बनता है। समय बदलने के बावजूद लोकगीत, मेहंदी, पारंपरिक वेशभूषा और सामूहिक उत्सव जैसी परंपराएं नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का माध्यम बनी हुई हैं।

आज के समय में कजली तीज का संदेश आधुनिक जीवन की तेज रफ्तार में त्योहार केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि परिवार और समाज को जोड़ने वाले अवसर भी हैं। कजली तीज हमें अपनी लोकसंस्कृति, पारिवारिक संबंधों और प्रकृति के साथ जुड़ाव को याद करने का अवसर देती है।

बूंदी की कजली तीज इस बात का उदाहरण है कि जब कोई लोकपरंपरा पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रहती है, तो वह केवल पर्व नहीं रहती–वह किसी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान बन जाती है। कजली तीज का संदेश यही है–आस्था में विश्वास रहे, रिश्तों में अपनापन रहे, प्रकृति के प्रति सम्मान रहे और लोकसंस्कृति की यह रंगीन विरासत आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुंचे।

रिश्तों का असली अर्थ: शिकायत नहीं, संवेदना

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

मनुष्य अकेला नहीं जीता। जन्म से लेकर जीवन के अंतिम पड़ाव तक वह माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, मित्रों, सगे-संबंधियों और समाज के अनेक लोगों से जुड़ा रहता है। यही रिश्ते जीवन को भावनाओं, अपनत्व और जिम्मेदारियों से भरते हैं। भारतीय आध्यात्मिक चिंतन में यह मान्यता रही है कि मनुष्य के वर्तमान जीवन में मिलने वाले संबंध उसके पूर्वजन्मों के कर्मों से जुड़े हो सकते हैं। इसे धार्मिक और दार्शनिक दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता है, न कि वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित तथ्य के रूप में। इस विचार का मूल संदेश मनुष्य को अपने संबंधों के प्रति अधिक धैर्यवान और जिम्मेदार बनने की प्रेरणा देना है।

हर रिश्ता कुछ सिखाता है

जीवन का कोई रिश्ता हमेशा सुख देने वाला नहीं होता। कहीं प्रेम अधिक होता है, तो कहीं अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं। कहीं अपनापन मिलता है, तो कहीं मन को चोट भी पहुंचती है। ऐसे समय में रिश्ते को तुरंत समाप्त करने के बजाय संवाद, समझ और धैर्य का रास्ता अपनाना कई बार अधिक सार्थक हो सकता है। इसका अर्थ यह नहीं कि अन्याय या अपमान को चुपचाप सहते रहना चाहिए। स्वस्थ संबंधों में प्रेम के साथ आत्मसम्मान और स्पष्ट सीमाओं का भी महत्व है।

रिश्ते निभाने का अर्थ स्वयं को मिटा देना नहीं, बल्कि संवेदनशीलता और विवेक के साथ एक-दूसरे को समझना है। देने की भावना क्यों जरूरी है?

आज का जीवन अपेक्षाओं से भरा हुआ है। हम अक्सर सोचते हैं कि सामने वाला हमारे लिए क्या कर रहा है। लेकिन यदि प्रश्न को थोड़ा बदल दिया जाए–मैं इस रिश्ते के लिए क्या कर सकता हूं?–तो संबंधों का स्वरूप बदल सकता है। किसी को समय देना, उसकी बात ध्यान से सुनना, आवश्यकता के समय सहायता करना, गलती होने पर क्षमा मांगना और अपनों की खुशियों में सहभागी बनना भी देने के ही रूप हैं।

हर मदद का प्रतिफल तुरंत मिले, यह आवश्यक नहीं। कई बार किसी के लिए किया गया छोटा-सा अच्छा कार्य उसके जीवन में बड़ी राहत बन सकता है। ऋण और लेन-देन की आध्यात्मिक धारणा कर्म और ऋण की अवधारणा भारतीय दर्शन में गहरी जड़ें रखती है। इसी आधार पर कई आध्यात्मिक परंपराएं जीवन के संबंधों को कर्मों के परिणाम और आपसी दायित्व से जोड़कर देखती हैं। इस दृष्टिकोण का सकारात्मक पक्ष यह है कि यह व्यक्ति को शिकायत के बजाय आत्ममंथन की ओर ले जाता है। यदि किसी संबंध में कठिनाई है, तो हम स्वयं से पूछ सकते हैं–क्या मैंने अपना कर्तव्य पूरी ईमानदारी से निभाया है? क्या मेरी अपेक्षाएं आवश्यकता से अधिक हैं? क्या संवाद की कोई गुंजाइश अभी बाकी है?

लेकिन इस विचार का उपयोग किसी अन्याय, शोषण या गलत व्यवहार को उचित ठहराने के लिए नहीं किया जाना चाहिए।

धन से बड़ा है मन का संतोष

किसी को दिया हुआ धन वापस न मिले तो स्वाभाविक रूप से निराशा होती है। ऐसी परिस्थिति में कानूनी और व्यावहारिक उपाय करना व्यक्ति का अधिकार है। साथ ही, मन में निरंतर क्रोध और कटुता बनाए रखना स्वयं के लिए भी बोझ बन सकता है।

जहां संभव हो, समस्या का समाधान शांतिपूर्ण ढंग से खोजें। जहां समाधान संभव न हो, वहां अनुभव से सीख लेकर आगे बढ़ना मन की शांति के लिए बेहतर हो सकता है।

क्षमा का अर्थ भूल जाना नहीं है; क्षमा का अर्थ कई बार अपने मन को कटुता के बोझ से मुक्त करना होता है।

रिश्तों में अपेक्षा कम, कृतज्ञता अधिक

रिश्तों में सबसे बड़ी परेशानी तब पैदा होती है, जब प्रेम भी हिसाब-किताब में बदल जाता है। मैंने इतना किया, उसने इतना नहीं किया।

मैंने फोन किया, उसने नहीं किया।

मैंने मदद की, उसने लौटकर साथ नहीं दिया।

यदि हर रिश्ते का हिसाब रखा जाए तो मन कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। इसके विपरीत, यदि हम अपने हिस्से की जिम्मेदारी ईमानदारी से निभाने पर ध्यान दें, तो जीवन में तनाव कम हो सकता है।

आज का संदेश

रिश्तों को केवल अधिकार की दृष्टि से नहीं, जिम्मेदारी की दृष्टि से भी देखिए। जहां संभव हो, प्रेम दीजिए। जहां आवश्यकता हो, सहयोग दीजिए। जहां गलती हो, क्षमा मांगिए। जहां चोट लगी हो, संवाद का रास्ता तलाशिए। और जहां संबंध लगातार नुकसान पहुंचा रहा हो, वहां आत्मसम्मान और विवेक के साथ उचित सीमा तय कीजिए। जीवन में हमें यह निश्चित नहीं होता कि कौन व्यक्ति कितने समय तक हमारे साथ रहेगा। इसलिए जब तक कोई अपना हमारे जीवन में है, उसके साथ सम्मान, संवेदना और प्रेम से व्यवहार करना ही सबसे बड़ी समझदारी है।

अंतिम प्रार्थना हे प्रभु!

हमारे भीतर इतनी शक्ति दीजिए कि हम रिश्तों में केवल पाने की अपेक्षा न रखें, बल्कि अपनी क्षमता के अनुसार देने का भाव बनाए रखें। हमें ऐसा विवेक दीजिए कि हम प्रेम और आत्मसम्मान के बीच संतुलन समझ सकें, दूसरों की पीड़ा को महसूस कर सकें और अपने व्यवहार से किसी के जीवन में अनावश्यक दुख का कारण न बनें। क्योंकि अंततः जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति धन या वस्तुएं नहीं, बल्कि वे रिश्ते हैं जिनमें हमारे कारण किसी के चेहरे पर मुस्कान आई हो। रिश्तों का हिसाब जीवन नहीं बदलता, लेकिन रिश्तों में प्रेम और देने की भावना जीवन को अवश्य बदल सकती है।

दसलक्षण धर्म को जीवन में उतारें: वीरसागर महाराज

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। दसलक्षण पर्व के पावन अवसर पर निर्यापक श्रमण मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज ने श्रद्धालुओं का आान किया कि वे धर्म को केवल पूजा-पाठ और बाहरी धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित न रखें, बल्कि उसके दस गुणों को अपने विचार, व्यवहार और दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएं। अपने सारगर्भित प्रवचन में मुनिश्री ने कहा कि धार्मिक क्रियाएं साधना की शुरूआत हैं, किंतु उनका वास्तविक उद्देश्य मन की दिशा और जीवन के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना है। मन, वचन और काय के माध्यम से कर्मों का आस्त्रव और बंध होता है। शरीर और वाणी की अपनी सीमाएं हैं, जबकि मन निरंतर सक्रिय रहता है। इसलिए आध्यात्मिक उन्नति के लिए मन को नियंत्रित कर धमार्नुकूल बनाना आवश्यक है। मुनिश्री ने श्रद्धालुओं को मंदिर-दर्शन, पूजा और अन्य धार्मिक गतिविधियों के साथ प्रतिदिन आत्मचिंतन की आदत विकसित करने की प्रेरणा दी। उन्होंने विशेष रूप से सायंकाल कम से कम दस मिनट आत्मविश्लेषण के लिए निर्धारित करने का सुझाव दिया, ताकि व्यक्ति पूरे दिन के अपने विचारों, वाणी और व्यवहार का परीक्षण कर सके तथा अगले दिन स्वयं को बेहतर बनाने का संकल्प ले सके। दसलक्षण धर्म का व्यावहारिक संदेश उत्तम क्षमा के संदर्भ में मुनिश्री ने मन में छिपे वैर, द्वेष और पुराने मन-मुटाव को पहचानकर उन्हें समाप्त करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को शांत मन से उन लोगों के प्रति अपने भावों का परीक्षण करना चाहिए, जिनके प्रति उसके मन में कटुता है, और हृदय से क्षमा का भाव विकसित करना चाहिए।

उत्तम मार्दव अर्थात विनम्रता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने धन, शिक्षा, पद, प्रतिष्ठा, कुल अथवा धार्मिक साधना से उत्पन्न होने वाले अहंकार को पहचानने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि उपलब्धियां व्यक्ति को अहंकारी नहीं, बल्कि विनम्र और कृतज्ञ बनाएं। उत्तम आर्जव के माध्यम से मुनिश्री ने छल-कपट, मायाचारी, दिखावा और दोहरे व्यवहार से दूर रहने की प्रेरणा दी। व्यक्ति को स्वयं से यह प्रश्न करना चाहिए कि उसके मन और व्यवहार में कहीं अंतर तो नहीं है। सरलता, निष्कपटता और पारदर्शिता को उन्होंने आर्जव धर्म का आधार बताया।

उत्तम शौच के अंतर्गत बाहरी स्वच्छता से अधिक मानसिक संतोष और लोभ से

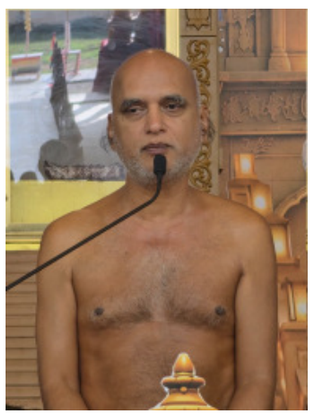

मुक्ति पर बल दिया गया। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति को अपनी वास्तविक आवश्यकताओं और असीमित इच्छाओं के बीच अंतर समझना चाहिए तथा दूसरों से निरंतर तुलना करने के बजाय संतोष का भाव विकसित करना चाहिए। उत्तम सत्य के संबंध में उन्होंने कहा कि सत्य केवल झूठ न बोलने का नाम नहीं है, बल्कि वाणी की संपूर्ण शुद्धता आवश्यक है। कटु वचन, व्यंग्य, चुगली, निंदा और दूसरों को मानसिक पीड़ा पहुंचाने वाली भाषा से बचना भी सत्य धर्म की साधना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

उत्तम संयम के अंतर्गत इंद्रियों पर नियंत्रण को प्रमुखता देते हुए मुनिश्री ने स्वादेंद्रिय और दृष्टि सहित अन्य इंद्रियों के अनियंत्रित आकर्षण से सावधान रहने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि मन और शरीर की शक्ति को धर्म तथा आत्मकल्याण की दिशा में लगाना ही संयम की वास्तविक साधना है। उत्तम तप के संदर्भ में उन्होंने केवल बाहरी तपस्या के बजाय आभ्यंतर तप को भी महत्वपूर्ण बताया। प्रायश्चित, विनय और वैयावृत्य जैसे आंतरिक तपों के माध्यम से व्यक्ति अपने दोषों को स्वीकार कर उनमें सुधार कर सकता है। उत्तम त्याग को मुनिश्री ने सेवा और संवेदना से जोड़ते हुए कहा कि त्याग केवल वस्तुओं का परित्याग नहीं है। अपनी सामर्थ्य और संसाधनों को आवश्यकता के समय दूसरों के साथ साझा करना भी वास्तविक त्याग है। उन्होंने आहार, औषधि, ज्ञान और अभयदान के माध्यम से जरूरतमंदों की सहायता करने की प्रेरणा दी।

उत्तम आकिंचन्य के माध्यम से संसार की वस्तुओं, पद, प्रतिष्ठा और संबंधों की अनित्यता पर चिंतन करने का संदेश दिया गया। उन्होंने कहा कि बाहरी वस्तुओं के प्रति आसक्ति कम कर आत्मा के वास्तविक स्वरूप की ओर उन्मुख होना आकिंचन्य की साधना का मूल भाव है। अंतिम धर्म उत्तम ब्रह्मचर्य के अंतर्गत मुनिश्री ने विचार, वचन और आचरण की पवित्रता बनाए रखने पर बल दिया। उन्होंने संयमित जीवन और अशुद्ध भावों से बचने को आत्मिक उन्नति के लिए आवश्यक बताया।

दसलक्षण पर्व बने आत्मपरिवर्तन की साधना मुनि श्री 108 वीरसागर जी महाराज के प्रवचन का केंद्रीय संदेश रहा कि दसलक्षण धर्म केवल दस दिनों तक किए जाने वाले धार्मिक अनुष्ठानों का पर्व नहीं, बल्कि आत्मा के दस आंतरिक गुणों को जागृत करने की साधना है।

उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति प्रतिदिन संबंधित गुण पर मनन करे, अपनी कमियों को पहचाने और दिन के अंत में आत्मविश्लेषण करे, तो दसलक्षण पर्व जीवन में वास्तविक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। मुनिश्री ने विशेष रूप से कहा कि धर्म की सार्थकता मंदिर तक सीमित नहीं रहनी चाहिए। पूजा, पाठ और मंत्रजाप का प्रभाव व्यक्ति के घर, परिवार, कार्यस्थल और सामाजिक व्यवहार में दिखाई देना चाहिए।

उन्होंने बताया कि क्षमा से संबंध सुधरते हैं, मार्दव से अहंकार कम होता है, आर्जव से व्यवहार में सरलता आती है, शौच से संतोष बढ़ता है, सत्य से वाणी शुद्ध होती है, संयम से इंद्रियों पर नियंत्रण आता है, तप से आत्मबल बढ़ता है, त्याग से सेवा की भावना जागती है, आकिंचन्य से आसक्ति घटती है और ब्रह्मचर्य से जीवन में पवित्रता आती है। इस अवसर पर मुनिश्री ने श्रद्धालुओं को दसलक्षण पर्व को बाहरी अनुष्ठानों से आगे बढ़ाकर आत्मचिंतन, आत्मविश्लेषण और आंतरिक साधना की यात्रा बनाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि धर्म के सिद्धांतों को दैनिक जीवन में व्यवहार के रूप में अपनाना ही वास्तविक साधना और पर्व की सार्थकता है। समाचार प्रेषक: विपिन कुमार जैन, बेंगलुरु

रवाना होने से पहले सुनीं जन शिकायतें

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सोमवार को बेंगलुरु स्थित विधान सौध से आगे बढ़ने से पहले जन शिकायतें सुनने में व्यस्त नजर आए। मुख्यमंत्री ने वहां मौजूद लोगों से बातचीत कर उनकी समस्याएं सुनीं और संबंधित मामलों की जानकारी ली।

विधान सौध परिसर में मुख्यमंत्री के इस सहज और जनसंपर्कपूर्ण व्यवहार ने लोगों

का ध्यान आकर्षित किया। अपने निर्धारित कार्यक्रम के लिए रवाना होने से पूर्व उन्होंने नागरिकों की बात सुनने को प्राथमिकता दी।

जन शिकायतों को सीधे सुनने की इस पहल को आम नागरिकों के साथ संवाद स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। मुख्यमंत्री ने लोगों द्वारा रखी गई समस्याओं और मांगों को ध्यानपूर्वक सुना।

हालांकि, इस दौरान प्राप्त शिकायतों और उनके समाधान को लेकर विस्तृत आधिकारिक जानकारी उपलब्ध नहीं कराई गई है। संबंधित मामलों में आगे की कार्रवाई प्रशासनिक प्रक्रिया के अनुसार की जाएगी।

हर-हर महादेव की गूंज में शिव आराधना की पूणार्हुति

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। किंतनहल्ली स्थित लक्ष्मी ओरा फार्म हाउस में सावन मास के दौरान आयोजित विशेष शिव आराधना कार्यक्रम का धार्मिक वातावरण में पूणार्हुति के साथ समापन हुआ। समापन अवसर पर हवन-यज्ञ, पूजा-अर्चना, आरती, भजन संध्या और महाप्रसादी का आयोजन किया गया। आयोजकों के अनुसार, पूरे सावन मास में 12.50 लाख रुद्राक्षों से निर्मित शिवलिंग की विशेष पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान प्रतिदिन मंगला आरती, रुद्राभिषेक, भजन संध्या तथा श्रद्धालुओं के लिए भोजन प्रसादी का आयोजन किया गया।

मंत्रोच्चार से गूंजा परिसर

सावन मास के समापन और पूणार्हुति कार्यक्रम के दौरान हवन-यज्ञ में वैदिक मंत्रों का उच्चारण किया गया। उपस्थित श्रद्धालुओं ने भगवान शिव के जयघोष के

साथ वातावरण को भक्तिमय बना दिया। हवन की पूणार्हुति के बाद पूजा-अर्चना और आरती संपन्न हुई। संतों ने बताया

रुद्राक्ष धारण का महत्व

कार्यक्रम में ओमकारा आश्रम, ओमकार हिल्स, केंगेरी के आचार्य महामंडलेश्वर मधुसूदनानन्दन पुरी जी महाराज तथा साध्वी आत्मप्रोयानन्दपुरी जी महाराज का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

दोनों संतों ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए रुद्राक्ष धारण करने के धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व पर प्रकाश डाला तथा भगवान शिव की आराधना के प्रति श्रद्धा और आस्था बनाए रखने का संदेश दिया। इस अवसर पर पंडित राजेन्द्रकुमार शर्मा एवं ओमप्रकाश शर्मा का भी पावन सान्निध्य रहा।

सावन भर गूंजे शिव भजन भजन गायक गोविंददास वैष्णव बिजोवा ने पूरे सावन मास के दौरान विभिन्न अवसरों पर सुमधुर भजनों की प्रस्तुतियां दीं। समापन समारोह में भी भजन संध्या आयोजित की गई, जिसमें श्रद्धालुओं ने भक्ति संगीत का आनंद लिया।

पूणार्हुति कार्यक्रम में शामिल श्रद्धालुओं को प्रसाद स्वरूप रुद्राक्ष भी प्रदान किए गए। भक्तों ने दिया आयोजन को सफल बनाने में योगदान

कार्यक्रम को सफल बनाने में सुरेशकुमार मेहता, गौतमकुमार मेहता, डॉ. चेतनकुमार मेहता, पूनमकुमार मेहता, रूपेश सोलंकी, प्रवीण मेवाड़ा, महेंद्रसिंह राजपुरोहित, बालमसिंह गुर्जर, ताराचंद सीरवी, दीपक शर्मा, रितिक शर्मा, विनोद माली, अशोक सुंदेशा, राकेश सीरवी, चंद्रु गुर्जर, उत्तम सीरवी और चेनाराम सहित अनेक श्रद्धालुओं ने सहयोग प्रदान किया। सावन मास के दौरान आयोजित संपूर्ण धार्मिक कार्यक्रम का संचालन रूपेश सोलंकी ने किया। आयोजन के समापन पर श्रद्धालुओं ने भगवान शिव से सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। समाचार प्रेषक: रूपेश सोलंकी, बेंगलुरु

भजनों से गूंजा ओमकार हिल्स

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 30 अगस्त 2026। श्री

ओम्कारेश्वर गौ सेवा प्रतिष्ठान, बेंगलुरु के तत्वावधान में ओमकार हिल्स स्थित श्री ओंकार आश्रम महा संस्थान में विशाल भजन संध्या का आयोजन श्रद्धा और भक्ति के वातावरण में किया गया। महामंडलेश्वर मधुसूदन आनंदपुरी एवं साध्वी आत्मा प्रियानंदपुरी के सानिध्य में आयोजित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं गौ प्रेमियों ने सहभागिता की।

भजन संध्या में गायक ओम मुडेल ने अपनी सुमधुर प्रस्तुतियों से देर रात तक उपस्थित श्रोताओं को भक्ति रस में सराबोर किया। भजनों के दौरान श्रद्धालु भाव-विभोर होकर झूमते नजर आए और पूरा परिसर भक्तिमय वातावरण से गूंज उठा। इस अवसर पर गौ प्रेमी महेंद्र मुणोत ने गाय के धार्मिक एवं सामाजिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गाय केवल दूध देने वाला पशु नहीं है, बल्कि कृषि प्रधान देश भारत की परंपरा में उसे कामधेनु और कल्पवृक्ष के रूप में सम्मान दिया गया है। उन्होंने गौ सेवा एवं संरक्षण को सामाजिक दायित्व बताते हुए इसके प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यक्रम में बाल कलाकार अवनी पटेल ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुति देकर उपस्थित लोगों की खूब सराहना बटोरी। उनकी प्रस्तुति ने कार्यक्रम में सांस्कृतिक रंग भी भर दिया। भजन संध्या में दिलीप सोनी, गौतम मेहता, बाबू सिंह राजपुरोहित, प्रकाश चौहान, भंवर सिंह राजपुरोहित, रमेश कुमार चौधरी, कानसिंह राजपुरोहित, सुरेश सेणचा, बालू सिंह राजपुरोहित एवं जीवाराम कुमियाल सहित विभिन्न समाजों के प्रमुख प्रतिनिधि एवं अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रुपेश सोलंकी ने किया। आयोजन के दौरान आयोजकों की ओर से अतिथियों एवं दानदाताओं का सम्मान किया गया। कार्यक्रम के माध्यम से भक्ति, संस्कृति और गौ सेवा के प्रति सामाजिक चेतना का संदेश दिया गया। समाचार प्रेषक: उपेन्द्र कुमार, बेंगलुरु

विदेश में एकता, देश में सवाल: हरिप्रसाद ने RSS से मांगा जवाब

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और कर्नाटक प्रदेश कांग्रेस समिति (केपीसीसी) के अध्यक्ष बी. के. हरिप्रसाद ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत के न्यूयॉर्क में दिए गए धार्मिक एकता संबंधी बयान का उल्लेख करते हुए संघ की विचारधारा और देश के भीतर अल्पसंख्यकों को लेकर बन रहे राजनीतिक माहौल पर सवाल उठाए हैं। हरिप्रसाद ने कहा कि मोहन भागवत ने न्यूयॉर्क में आयोजित एक अंतरधार्मिक संवाद के दौरान कहा था कि जो व्यक्ति भारत में मुसलमानों के न रहने की इच्छा रखता है, वह सच्चा हिंदू नहीं हो सकता। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार, भागवत ने वन वर्ल्ड, वन ह्यूमैनिटी कार्यक्रम में धार्मिक विविधता, मानव गरिमा और विभिन्न आस्थाओं के प्रति सम्मान की बात कही थी। हरिप्रसाद ने इस बयान का स्वागत करते हुए प्रश्न उठाया कि यदि आरएसएस की सोच सभी धर्मों और समुदायों के प्रति समान सम्मान की है, तो भारत के भीतर अल्पसंख्यकों को लेकर राजनीतिक ध्रुवीकरण और अविश्वास के आरोप बार-बार क्यों सामने आते हैं। उन्होंने कहा कि विदेशों में हिंदू-मुस्लिम एकता और धार्मिक सद्भाव का संदेश दिया जाना महत्वपूर्ण है, लेकिन ऐसे संदेशों की वास्तविक विश्वसनीयता तब और मजबूत होती है, जब उनका प्रभाव देश की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में भी दिखाई दे। संविधान की भावना का दिया हवाला हरिप्रसाद ने भारतीय संविधान का उल्लेख करते हुए कहा कि संविधान प्रत्येक नागरिक को समानता, धार्मिक स्वतंत्रता और कानून के समक्ष समान संरक्षण का अधिकार प्रदान करता है। उनके अनुसार किसी भी नागरिक को धर्म के आधार पर कमतर समझने वाली सोच संविधान की मूल भावना के अनुरूप नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था का आधार सभी नागरिकों के अधिकारों की समान सुरक्षा है और सरकार तथा राजनीतिक संगठनों की जिम्मेदारी समाज में सभी समुदायों के बीच विश्वास और समानता का वातावरण बनाए रखना है। राजनीतिक ध्रुवीकरण पर उठाए सवाल केपीसीसी अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि देश में धार्मिक पहचान को राजनीतिक विमर्श का प्रमुख विषय बनाए जाने से सामाजिक और आर्थिक न्याय के मूल प्रश्न पीछे छूट जाते हैं। उन्होंने कहा कि दलितों, आदिवासियों और अन्य पिछड़े वर्गों ने ऐतिहासिक रूप से शिक्षा, रोजगार, संपत्ति और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के क्षेत्रों में असमानताओं का सामना किया है। संविधान ने इन ऐतिहासिक चुनौतियों के समाधान के लिए आरक्षण, समान अवसर और सामाजिक न्याय जैसे प्रावधान किए हैं। हरिप्रसाद के अनुसार, जब सार्वजनिक बहस का केंद्र सामाजिक न्याय के बजाय बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक की धार्मिक पहचान बन जाती है, तब समाज के वंचित वर्गों से जुड़े बुनियादी मुद्दों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। वाजपेयी से जुड़ी पुरानी घटना का उल्लेख अपने बयान में हरिप्रसाद ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के विदेश मंत्री रहने के दौरान कोलंबो में हुई एक कथित घटना का भी उल्लेख किया। वरिष्ठ पत्रकार बी. आर. पी. भास्कर द्वारा अपने संस्मरणों में वर्णित एक प्रसंग के अनुसार, एक भोज के दौरान वाजपेयी से एक व्यंजन को लेकर सवाल किया गया था, जिस पर उन्होंने कथित तौर पर कहा था कि यह भारतीय गाय का मांस नहीं है। इस प्रसंग का उल्लेख वर्षों बाद भास्कर के संस्मरणों के आधार पर प्रकाशित रिपोर्टों में हुआ है। हरिप्रसाद ने कहा कि इस प्रकार के प्रसंगों को किसी व्यक्ति की निजी खान-पान की पसंद के संदर्भ में अलग ढंग से देखा जा सकता है, लेकिन जब धार्मिक प्रतीकों और आस्थाओं का उपयोग राजनीतिक विमर्श में किया जाता है, तब सार्वजनिक जीवन में कथनी और व्यवहार के बीच समानता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है। कथनी और व्यवहार में समानता जरूरी हरिप्रसाद ने कहा कि मोहन भागवत के न्यूयॉर्क संदेश को केवल एक भाषण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उसकी कसौटी भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में दिखाई देने वाले व्यवहार पर भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि सभी धर्मों और समुदायों के प्रति समान सम्मान का संदेश वास्तविक है, तो देश के भीतर भी मुस्लिम, ईसाई और अन्य अल्पसंख्यक समुदायों के बीच सुरक्षा, विश्वास और समानता का वातावरण मजबूत होना चाहिए। हालांकि, आरएसएस स्वयं को किसी भी समुदाय के विरोधी संगठन के रूप में स्वीकार नहीं करता है और विभिन्न अवसरों पर संगठन के नेताओं ने सामाजिक समरसता तथा सभी समुदायों के साथ संवाद की बात कही है। मोहन भागवत के हालिया न्यूयॉर्क संबोधन में भी उन्होंने कहा कि भारत में मुसलमानों के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए, ऐसा मानने वाला व्यक्ति हिंदू होने के मूल भाव से दूर हो जाता है। भारतीयता को प्राथमिक पहचान बनाने की अपील हरिप्रसाद ने कहा कि संविधान की दृष्टि में नागरिक की प्राथमिक पहचान भारतीय नागरिक के रूप में है और राज्य का दायित्व किसी एक धार्मिक समुदाय की भावनाओं को प्राथमिकता देना नहीं, बल्कि सभी नागरिकों के संवैधानिक अधिकारों की समान रूप से रक्षा करना है। उन्होंने कहा कि धार्मिक विविधता भारत की ऐतिहासिक और सामाजिक शक्ति रही है। इसलिए राजनीतिक और सामाजिक संगठनों को ऐसी भाषा और व्यवहार अपनाना चाहिए, जिससे समाज में भाईचारा, विश्वास और समान नागरिकता की भावना मजबूत हो। विदेशी मंचों का संदेश भारत में भी दिखे हरिप्रसाद ने अपने बयान में कहा कि विदेशों में धार्मिक एकता और मानवता का संदेश देना पर्याप्त नहीं है। उनके अनुसार, ऐसे संदेशों की वास्तविक परीक्षा देश के भीतर सामाजिक व्यवहार और राजनीतिक वातावरण में होती है। उन्होंने कहा कि भारत की सड़कों, गांवों, शहरों और राजनीतिक विमर्श में भी वही एकता और भाईचारे की भाषा दिखाई देनी चाहिए, जिसकी चर्चा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर की जाती है। उन्होंने आरएसएस और उससे जुड़े राजनीतिक विमर्श से जुड़े लोगों से आग्रह किया कि धार्मिक पहचान के आधार पर विभाजन की राजनीति से ऊपर उठकर संविधान, सामाजिक न्याय, समान नागरिक अधिकार और राष्ट्रीय एकता को प्राथमिकता दी जाए। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, मोहन भागवत के न्यूयॉर्क संबोधन के बाद धार्मिक सह-अस्तित्व, आरएसएस की विचारधारा और भारत में अल्पसंख्यकों की स्थिति को लेकर राजनीतिक बहस तेज हो सकती है। इस बहस में विभिन्न राजनीतिक दलों और संगठनों के विचार अलग-अलग हैं, जबकि सभी पक्षों के लिए संवैधानिक मूल्यों और सामाजिक सद्भाव को केंद्र में रखना महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

धर्म ही आत्मा का सच्चा तारक

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। श्री जिन कुशल सूरी जैन दादावाड़ी ट्रस्ट, बसवनगुडी के तत्वावधान में आयोजित चातुर्मास प्रवचन के दौरान प. पूज्य साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. ने ध्यान शतक ग्रंथ की विवेचना करते हुए धर्म, आत्मा और आत्मध्यान के महत्व पर प्रकाश डाला।

साध्वी श्री ने कहा कि जिस प्रकार शरीर के पोषण और उदर पूर्ति के लिए समय-समय पर भोजन आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन को सही दिशा देने के लिए प्रतिदिन धर्मक्रिया का होना भी आवश्यक है। धर्म जीवन में उस दीपक के समान है, जो अंधकार के बीच प्रकाश का मार्ग दिखाता है।

उन्होंने कहा कि धर्मध्यान की शुभ और शुक्ल अवस्थाएं आत्मा को संसार-सागर से पार लगाने वाली हैं। शरीर अनित्य है और मनुष्य प्रतिपल मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहा है। इसलिए जब तक शरीर और इन्द्रियां समर्थ हैं, तब तक धर्म, ध्यान और आत्मचिंतन में समय लगाना चाहिए।

साध्वी श्री प्रियश्रद्धांजना श्री जी म. सा. ने कहा कि इस मानव जीवन में धमार्राधना का दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है। आत्मा का स्वभाव धर्म है और धर्म का स्वभाव आत्मा को तिराने वाला है। अपनी वास्तविक सत्ता को पहचानना तथा आत्मध्यान में रमण करना ही आत्मा के स्वभाव की पहचान है।

उन्होंने धर्म और धन के महत्व को सरल उदाहरण से समझाते हुए कहा कि धर्म को औषधि की तरह अपने अंतर्मन में उतारना चाहिए, जबकि धन का उपयोग मलहम की तरह बाहरी जीवन की आवश्यकताओं के लिए करना चाहिए। धर्म जब भीतर समाहित हो जाता है, तो जीवन में शांति और समाधि का मार्ग प्रशस्त होता है।

प्रवचन में उन्होंने सांसारिक क्रियाकलापों को शून्य के समान बताते हुए कहा कि यदि जीवन के आगे धर्म का अंक जुड़ जाए, तो उसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है। उन्होंने दुर्ध्यान के अंतर्गत रसलोलुपता विषय का भी विस्तार से विवेचन किया और संयमित जीवन की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर आयोजित सरस्वती माता जाप अनुष्ठान में ज्ञान वाटिका के बच्चों ने सरस्वती माता की स्तुति के साथ आकर्षक नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की, जिसे उपस्थित श्रद्धालुओं ने सराहा।

कार्यक्रम के दौरान दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा अभिमंत्रित सरस्वती माता की प्रतिमा श्रीमती शांतिदेवी पुखराज तेजराज गुलेच्छा परिवार को प्रदान की गई। इसी क्रम में एक अन्य प्रतिमा श्रीमती नेमीबाई सरदारमल जी धर्मेन्द्र कुमार संकलेचा परिवार को भेंट की गई।

धार्मिक आयोजन में श्रद्धालुओं ने साध्वी श्री के प्रवचनों का लाभ लेते हुए आत्मचिंतन, धमार्राधना और संयममय जीवन अपनाने का संकल्प लिया। समाचार प्रेषक: ललित डाकलिया बेंगलुरु

बेंगलुरु में खाद्य सुरक्षा का बड़ा छापा

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
संवाददाता: अशोक कुमार सिंह

बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। कर्नाटक खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने बेंगलुरु में खाद्य सुरक्षा नियमों के उल्लंघन के खिलाफ व्यापक जांच अभियान चलाते हुए कई होटल, रेस्टोरेंट और खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच की। कार्रवाई के दौरान बड़ी मात्रा में खराब, एक्सपायर्ड और मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त खाद्य सामग्री मिलने का दावा किया गया। कई स्थानों पर स्वच्छता, खाद्य भंडारण और लेबलिंग से जुड़ी कमियां भी सामने आईं।

30 टीमों ने 60 प्रतिष्ठानों की जांच की

खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन विभाग ने 7 से 9 अगस्त 2026 के बीच विशेष जांच अभियान चलाया। अभियान में 30 टीमों को शामिल किया गया, जिन्होंने बेंगलुरु शहरी क्षेत्र और ग्रेटर बेंगलुरु क्षेत्र के करीब 60 तीन सितारा और पांच सितारा होटल तथा अन्य खाद्य प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने जांच के दौरान 77 खाद्य नमूने एकत्र कर परीक्षण के लिए भेजे। निरीक्षण में खाद्य पदार्थों के भंडारण, लेबलिंग, स्वच्छता और रखरखाव से संबंधित विभिन्न अनियमितताएं सामने आने की बात कही गई।

640 किलो मांस-मछली और 276 किलो खराब सब्जियां मिलीं विभाग की कार्रवाई के दौरान बड़ी मात्रा में खाद्य सामग्री जब्त अथवा निर्धारित प्रक्रिया के तहत नष्ट की गई। रिपोर्टों के अनुसार करीब 640 किलोग्राम मटन, चिकन और मछली, जबकि 276 किलोग्राम सड़ी अथवा फफूंद प्रभावित सब्जियां कार्रवाई के दौरान मिलीं।

इसके अलावा एक्सपायर्ड दूध और दही, बेकरी उत्पाद, गलत लेबलिंग वाले अथवा एक्सपायर्ड खाद्य पदार्थ तथा इस्तेमाल किया हुआ या मानकों के अनुरूप नहीं पाया गया कुकिंग ऑयल भी अधिकारियों की कार्रवाई के दायरे में आया। यूबी सिटी के Skyye Lounge की रसोई बंद यूबी सिटी स्थित Skyye Lounge की रसोई में खाद्य सुरक्षा अधिकारियों को गंभीर स्वच्छता और खाद्य भंडारण संबंधी कमियां मिलने की सूचना है। निरीक्षण के बाद रसोई को बंद करने की कार्रवाई की गई।

रिपोर्टों के अनुसार जांच के दौरान खराब और फफूंद प्रभावित मांस के साथ एक्सपायर्ड दूध एवं दही जैसे उत्पाद भी पाए गए। अधिकारियों ने संबंधित खाद्य सामग्री को मानव उपभोग के लिए अनुपयुक्त मानते हुए नियमानुसार कार्रवाई की।

होटल Sky में भी कार्रवाई यूबी सिटी स्थित Hotel Sky में जांच के दौरान करीब 45 किलोग्राम खराब चिकन और बीफ तथा 6 किलोग्राम वेजिटेबल कटलेट मिलने की जानकारी सामने आई। इसके अतिरिक्त 15 लीटर इस्तेमाल किया हुआ कुकिंग ऑयल भी अधिकारियों की कार्रवाई के दायरे में आया।

अधिकारियों के अनुसार निरीक्षण में अनुपयुक्त पाए गए खाद्य पदार्थों को निर्धारित प्रक्रिया के तहत हटाया अथवा नष्ट किया गया। कई जगह स्टोरेज और स्वच्छता में कमियां

विशेष जांच अभियान के दौरान अधिकारियों को विभिन्न प्रतिष्ठानों में खाद्य पदार्थों के अनुचित भंडारण, एक्सपायर्ड सामग्री, लेबलिंग संबंधी खामियां और अस्वच्छ खाद्य प्रबंधन जैसी समस्याएं मिलीं।

कुछ स्थानों पर शाकाहारी और मांसाहारी खाद्य पदार्थों को अलग-अलग रखने तथा सुरक्षित तरीके से भंडारण करने के मानकों के पालन पर भी सवाल उठे। विभाग ने नियमों के उल्लंघन वाले प्रतिष्ठानों को नोटिस जारी करने और मामले की गंभीरता के आधार पर आगे नियामकीय कार्रवाई की प्रक्रिया शुरू की है। खाद्य सुरक्षा को लेकर बढ़ी चिंता

इस कार्रवाई के बाद बेंगलुरु के होटल और रेस्टोरेंटों में रसोई की स्वच्छता, खाद्य सामग्री के रखरखाव और ग्राहकों को परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता को लेकर चर्चा तेज हो गई है।

खाद्य प्रतिष्ठानों की जिम्मेदारी है कि वे निर्धारित खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करते हुए उपभोक्ताओं को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण भोजन उपलब्ध कराएं। वहीं, खाद्य सुरक्षा विभाग का कहना है कि इस प्रकार के निरीक्षणों का उद्देश्य नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य हितों की रक्षा करना है।

आगे भी जारी रहेगी कार्रवाई

विभाग ने संकेत दिए हैं कि बेंगलुरु में खाद्य सुरक्षा मानकों की जांच और प्रवर्तन कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी। जिन प्रतिष्ठानों में नमूने लिए गए हैं, वहां अंतिम निष्कर्ष प्रयोगशाला जांच और नियामकीय प्रक्रिया के बाद स्पष्ट होंगे।

यह कार्रवाई केवल खराब खाद्य सामग्री मिलने तक सीमित नहीं है, बल्कि होटल और रेस्टोरेंट उद्योग के लिए खाद्य सुरक्षा, स्वच्छता और गुणवत्ता मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने का गंभीर संदेश भी है।

तेल की तेजी से बाजार लाल

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com
संवाददाता: अशोक कुमार सिंह

मुंबई, 31 अगस्त 2026। अगस्त महीने के अंतिम कारोबारी दिन भारतीय शेयर बाजार में कमजोर शुरूआत देखने को मिली। वैश्विक बाजारों में नरमी, पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव और कच्चे तेल की कीमतों में तेज उछाल के कारण निवेशकों के बीच सतर्कता बढ़ गई, जिससे सेंसेक्स और निफ्टी दोनों लाल निशान में कारोबार करते दिखाई दिए। शुरूआती कारोबार में बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स करीब 226 अंक गिरकर 77,028.56 अंक पर पहुंच गया, जबकि एनएसई का निफ्टी लगभग 120 अंक की गिरावट के साथ 24,053.55 अंक पर कारोबार करता देखा गया। कच्चे तेल की तेजी ने बढ़ाई चिंता

बाजार पर दबाव की प्रमुख वजहों में कच्चे तेल की कीमतों में आई तेजी शामिल रही। पश्चिम एशिया में नए भू-राजनीतिक तनाव के बीच ब्रेंट क्रूड 90 डॉलर प्रति बैरल के स्तर के पार पहुंच गया। भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयातित कच्चे तेल से पूरा करता है। ऐसे में तेल की कीमतों में लगातार तेजी से आयात लागत, महंगाई और तेल पर निर्भर उद्योगों की लागत बढ़ने की आशंका रहती है। यही कारण है कि निवेशकों की नजर कच्चे तेल की आगे की चाल पर बनी हुई है।

वैश्विक संकेतों और अमेरिकी ब्याज दरों का असर

अमेरिकी ब्याज दरों को लेकर बढ़ती अनिश्चितता ने भी निवेशकों की धारणा को प्रभावित किया। फेडरल रिजर्व की मौद्रिक नीति को लेकर सख्त रुख की आशंका और महंगाई संबंधी चिंताओं के चलते वैश्विक बाजारों में जोखिम लेने की क्षमता कमजोर पड़ी।

एशियाई बाजारों में भी कमजोरी का रुख

देखने को मिला, जिसका असर भारतीय शेयर बाजार पर पड़ा। विदेशी निवेशकों की गतिविधियां और वैश्विक बॉन्ड यील्ड भी बाजार के लिए महत्वपूर्ण कारक बने हुए हैं।

इन प्रमुख शेयरों पर बिकवाली का दबाव

शुरूआती कारोबार में इंफोसिस, टाटा स्टील, इंटरग्लोब एविएशन, बजाज फाइनेंस, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज और टाइटन जैसे प्रमुख शेयरों में कमजोरी देखी गई। हालांकि बाजार की व्यापक गिरावट के बीच सभी शेयरों में एक जैसी स्थिति नहीं रही। एचडीएफसी बैंक के शेयरों में तेजी दर्ज की गई, जिससे सूचकांकों की गिरावट को कुछ हद तक सहारा मिला। निवेशकों की नजर इन कारकों पर बाजार विशेषज्ञों और निवेशकों की नजर फिलहाल कई महत्वपूर्ण घटनाक्रमों पर बनी हुई है। इनमें प्रमुख रूप से– - कच्चे तेल की कीमतों की दिशा, - पश्चिम एशिया में भू-राजनीतिक स्थिति, - अमेरिकी फेडरल रिजर्व के ब्याज दर संबंधी संकेत, - विदेशी निवेशकों की खरीद-बिक्री, - भारतीय और अमेरिकी आर्थिक आंकड़े शामिल हैं। इन कारकों में होने वाला बदलाव आने वाले दिनों में भारतीय शेयर बाजार की दिशा और निवेशकों की धारणा को प्रभावित कर सकता है। निफ्टी के लिए 24,000 का स्तर अहम

मौजूदा उतार-चढ़ाव के बीच निफ्टी के लिए 24,000 अंक का स्तर निवेशकों और तकनीकी विश्लेषकों की नजर में महत्वपूर्ण बना हुआ है। बाजार में कमजोरी जारी रहने की स्थिति में इस स्तर के आसपास निफ्टी की प्रतिक्रिया पर विशेष नजर रहेगी। विश्लेषकों के अनुसार, बाजार की दिशा केवल तकनीकी स्तरों से नहीं, बल्कि कच्चे तेल, वैश्विक तनाव और विदेशी निवेश प्रवाह जैसे कारकों से भी तय होगी।

निवेशकों के लिए सतर्कता जरूरी

मौजूदा परिस्थितियों में शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव तेज रहने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। ऐसे समय में केवल बाजार की एक दिन की तेजी या गिरावट को देखकर जल्दबाजी में निवेश संबंधी निर्णय लेना जोखिमपूर्ण हो सकता है।

निवेशकों को अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेना चाहिए। जरूरत पड़ने पर पंजीकृत वित्तीय सलाहकार से परामर्श लेना उपयोगी हो सकता है। बाजार का संकेत

अगस्त के अंतिम कारोबारी दिन भारतीय शेयर बाजार पर वैश्विक घटनाक्रमों का स्पष्ट प्रभाव दिखाई दिया। महंगा कच्चा तेल, पश्चिम एशिया में बढ़ता तनाव और अमेरिकी ब्याज दरों को लेकर अनिश्चितता फिलहाल निवेशकों की चिंता के प्रमुख कारण बने हुए हैं। आने वाले कारोबारी सत्रों में कच्चे तेल की कीमतों और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों में होने वाले बदलाव भारतीय बाजार की आगे की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

प्रतिभावान विद्यार्थियों का होगा सम्मान

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

चेन्नई, 31 अगस्त 2026। चौधरी आंजणा समाज चेन्नई की ओर से प्रतिभावान विद्यार्थी प्रोत्साहन सम्मान समारोह का आयोजन आगामी 6 सितंबर 2026, रविवार को साहूकारपेट स्थित श्री राजेश्वर भवन में किया जाएगा। समारोह में समाज के प्रतिभावान विद्यार्थियों को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों के लिए प्रशस्ति पत्र एवं सिल्वर मेडल प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा। आयोजन संतश्री विष्णुजी महाराज, शिकारपुरा धाम के सानिध्य में संपन्न होगा। समारोह में डॉ. राजूजी पटेल, प्रोफेसर, वीआईटी यूनिवर्सिटी चेन्नई मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे, जबकि नरेन्द्र कुमार, जीएसटी ऑडिट ऑफिसर विशिष्ट अतिथि के रूप में समारोह की गरिमा बढ़ाएंगे।

आंजणा समाज शिक्षा समिति चेन्नई द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले इस सम्मान समारोह का उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करना तथा समाज में शैक्षणिक जागरूकता को बढ़ावा देना है। समारोह के दौरान प्रतिभावान विद्यार्थियों के सम्मान के साथ-साथ बच्चों द्वारा विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी जाएंगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम में देशभक्ति गीत, कविताएं, भाषण, नाटक एवं नृत्य सहित विभिन्न प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र रहेंगी।

कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर रविवार को आंजणा समाज शिक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई, जिसमें समारोह की अंतिम रूपरेखा तैयार की गई और विभिन्न व्यवस्थाओं पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में शिक्षा समिति से जुड़े दिनेश करड़, निंबाराम, नगाराम, जेपाराम, भंवरलाल, मनाराम, जुजाराम, प्रतापराम, पकाराम, डूंगराराम, रूपाराम, भगराज, सुजाराम, दिनेश रुचियार, कपूराराम, लादाराम, खेताराम, रोहित तथा भूपेंद्र आंजणा सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

शिक्षा समिति के सदस्यों ने बताया कि प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मानित करने की यह पहल समाज में शिक्षा के प्रति सकारात्मक वातावरण तैयार करने और नई पीढ़ी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने का निरंतर प्रयास है। समाचार प्रेषक: दिनेश करड़, चेन्नई

टिकट से पहले बगावत की जंग

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

जयपुर, 31 अगस्त 2026। राजस्थान के निकाय चुनाव में भाजपा और कांग्रेस के लिए अब असली चुनौती विपक्ष से मुकाबले के साथ-साथ अपने ही नाराज नेताओं और कार्यकर्ताओं को साधने की बन गई है। नामांकन दाखिल करने के अंतिम दिन तक कई निकायों में दोनों प्रमुख दलों की ओर से प्रत्याशियों की अधिकृत सूची सार्वजनिक नहीं किए जाने से राजनीतिक सरगर्मी तेज हो गई है। टिकट वितरण में देरी के बीच दोनों दलों में बैठकों और मंथन का दौर लगातार जारी है। स्थानीय नेताओं, संगठन पदाधिकारियों और वरिष्ठ नेताओं से फीडबैक लेकर उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया चल रही है। बताया जा रहा है कि कुछ स्थानों पर अंतिम समय में प्रत्याशियों को टेलीफोन के माध्यम से चुनाव चिन्ह और उम्मीदवारी की सूचना दी जा सकती है।

टिकट तय होते ही बढ़ेगा बगावत का खतरा

कई वार्डों में एक ही टिकट के लिए अनेक दावेदार मैदान में हैं। ऐसे में किसी एक उम्मीदवार के नाम पर अंतिम मुहर लगते ही अन्य दावेदारों की नाराजगी खुलकर सामने

आने की आशंका है।

दोनों दलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि टिकट नहीं मिलने से नाराज नेताओं और कार्यकर्ताओं को किस प्रकार पार्टी के साथ बनाए रखा जाए। कई क्षेत्रों से ऐसे संकेत मिले हैं कि टिकट से वंचित रहने वाले कुछ दावेदार निर्दलीय चुनाव लड़ने का विकल्प चुन सकते हैं। भाजपा के सामने नाराज नेताओं को साधने की चुनौती भाजपा में टिकट वितरण को लेकर कई निकायों में असंतोष की स्थिति सामने आई है। स्थानीय स्तर पर सक्रिय कार्यकर्ताओं और दावेदारों का कहना है कि टिकट चयन में स्थानीय राजनीतिक समीकरणों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। पाली में पार्टी के पूर्व जिला नेता और पांच बार पार्षद रह चुके राकेश भाटी के कांग्रेस में शामिल होने की चर्चा ने राजनीतिक हलचल बढ़ा दी है। वहीं अजमेर में पूर्व मेयर धर्मेंद्र गहलोत की नाराजगी भी राजनीतिक चर्चा का विषय बनी हुई है। भीलवाड़ा में महिला मोर्चा से जुड़ी कुछ स्थानीय पदाधिकारियों ने टिकट वितरण में कथित अनदेखी और परिवारवाद को लेकर विरोध जताया है। उदयपुर सहित अन्य निकायों में भी कुछ कार्यकर्ताओं ने बाहरी अथवा कथित तौर पर 'पैराशूट उम्मीदवारों' को टिकट दिए जाने की संभावना के खिलाफ अपनी आपत्ति दर्ज कराई है। भाजपा संगठन के सामने अब अधिकृत उम्मीदवारों की घोषणा के साथ-साथ नाराज दावेदारों को मनाने की चुनौती खड़ी हो गई है। कांग्रेस में भी टिकट को लेकर खींचतान कांग्रेस भी टिकट वितरण को लेकर अंदरूनी असंतोष से जूझ रही है। झालावाड़ के पूर्व सभापति मनीष शुक्ला ने चुनाव समिति और टिकट वितरण की प्रक्रिया को लेकर सवाल उठाते हुए अपनी नाराजगी जाहिर की है।

परिसीमन और वार्ड आरक्षण के बाद कई पुराने दावेदारों के राजनीतिक समीकरण बदल गए हैं। कुछ क्षेत्रों में पैनल में नाम शामिल होने के बावजूद टिकट नहीं मिलने की आशंका से स्थानीय नेताओं और कार्यकर्ताओं में असंतोष देखा जा रहा है। पार्टी के स्थानीय निवासियों को प्राथमिकता देने जैसे नियमों से भी कुछ पुराने दावेदारों की उम्मीदवारी प्रभावित हुई है। ऐसे में कांग्रेस नेतृत्व के सामने भी नाराज नेताओं को निर्दलीय उम्मीदवार बनने से रोकना एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

एक वार्ड का बागी भी बिगाड़ सकता है समीकरण

निकाय चुनाव में मुकाबला वार्ड स्तर पर होता है और कई स्थानों पर जीत-हार का अंतर बेहद कम हो सकता है। ऐसे में किसी प्रभावशाली नेता या कार्यकर्ता का निर्दलीय चुनाव मैदान में उतरना पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार के चुनावी समीकरण को प्रभावित कर सकता है। राजनीतिक जानकारों के अनुसार, भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए टिकट वितरण के बाद असली परीक्षा शुरू होगी। अधिकृत प्रत्याशी घोषित करने के साथ संगठन को यह सुनिश्चित करना होगा कि नाराज दावेदार पार्टी विरोधी गतिविधियों या निर्दलीय चुनाव लड़ने का रास्ता न अपनाएं।

नामांकन के अंतिम दिन साफ होगी तस्वीर

नामांकन के अंतिम दिन प्रत्याशियों की सूची और चुनाव चिन्ह मिलने के बाद यह काफी हद तक स्पष्ट हो जाएगा कि कौन पार्टी के अधिकृत उम्मीदवार के रूप में चुनाव मैदान में उतरेगा और कौन टिकट नहीं मिलने पर अलग राह चुन सकता है।

फिलहाल भाजपा और कांग्रेस दोनों ही दल अंतिम समय तक नाराज नेताओं और दावेदारों को मनाने की कोशिश में जुटे हैं। राजस्थान के निकाय चुनाव में मुकाबला केवल भाजपा और कांग्रेस के बीच नहीं, बल्कि दोनों दलों के भीतर उठ रहे असंतोष और संभावित बगावत को संभालने की क्षमता की भी परीक्षा साबित हो सकता है। अब सबकी निगाहें प्रत्याशियों की अंतिम घोषणा पर टिकी हैं। टिकटों का फैसला होते ही यह स्पष्ट होगा कि कौन संगठन के साथ खड़ा रहता है और कौन चुनावी मैदान में बागी बनकर अपनी ही पार्टी के उम्मीदवार के सामने चुनौती पेश करता है।

सूखा सूची से कुडलिगी बाहर, किसानों का प्रदर्शन

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

कुडलिगी, 31 अगस्त 2026। कर्नाटक के विजयनगर जिले के कुडलिगी तालुक को सूखा प्रभावित क्षेत्रों की सूची से बाहर किए जाने के विरोध में किसान समर्थक संगठनों ने सोमवार को जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। विभिन्न किसान संगठनों की मौजूदगी में आयोजित प्रदर्शन के दौरान सरकार के निर्णय पर नाराजगी जताते हुए कुडलिगी तालुक को पुनः सूखा प्रभावित क्षेत्र घोषित करने की मांग उठाई गई।

प्रदर्शनकारियों का कहना है कि क्षेत्र में बारिश की कमी और उससे उत्पन्न कृषि संबंधी परिस्थितियों का सीधा असर किसानों की आजीविका पर पड़ रहा है। ऐसे में तालुक को सूखा प्रभावित सूची से बाहर किए जाने का निर्णय किसानों के हितों के विपरीत है। किसान संगठनों ने प्रशासन और सरकार से जमीनी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन करने तथा प्रभावित

किसानों को आवश्यक राहत उपलब्ध कराने की मांग की। विरोध प्रदर्शन के समर्थन में कुडलिगी शहर का बाजार एक दिन के लिए बंद रखने का आान किया गया है। बाजार बंद के माध्यम से किसान संगठनों और स्थानीय व्यापारिक समुदाय द्वारा अपनी मांगों के समर्थन में सरकार का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रदर्शन के दौरान किसान नेताओं एवं समर्थक संगठनों ने कहा कि सूखे का आकलन केवल सरकारी आंकड़ों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि खेतों में वास्तविक स्थिति, वर्षा की मात्रा, फसल की स्थिति और किसानों को हुए नुकसान को भी आधार बनाया जाना चाहिए। किसानों ने मांग की कि संबंधित अधिकारी क्षेत्र का स्थलीय निरीक्षण कर वास्तविक स्थिति का आकलन करें। इसके साथ ही प्रभावित किसानों के लिए राहत उपायों, फसल नुकसान के आकलन तथा आवश्यक सरकारी सहायता पर तत्काल निर्णय लिया जाए।

हड़ताल से कैथल बेहाल, बाजार बंद

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

कैथल, 31 अगस्त 2026। कैथल में सफाई कर्मियों की मांगों को लेकर जारी हड़ताल का असर अब शहर की व्यवस्था और व्यापार पर साफ दिखाई देने लगा है। करीब 25 दिनों से चल रही हड़ताल के कारण बाजारों, कॉलोनियों और प्रमुख सड़कों पर कचरे के ढेर जमा हो गए हैं। बढ़ती गंदगी और बदबू से परेशान व्यापारियों ने प्रशासन और सरकार के खिलाफ नाराजगी जतानी शुरू कर दी है। सोमवार को तलाई बाजार के दुकानदारों ने सुबह नौ बजे से दोपहर 12 बजे तक दुकानें बंद रखकर विरोध दर्ज कराया। व्यापारियों ने चेतावनी दी कि यदि एक-दो दिनों के भीतर कचरा नहीं उठाया गया तो वे नियमित रूप से बाजार बंद करने पर विचार करने को मजबूर होंगे। कचरे के ढेर से ग्राहक भी हो रहे दूर तलाई बाजार में कई स्थानों पर कचरे के ढेर जमा होने से दुकानदारों और स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। व्यापारियों का कहना है कि गंदगी और दुर्गंध के कारण ग्राहक बाजार आने से बच रहे हैं, जिससे कारोबार प्रभावित हो रहा है। दुकानदारों ने यह भी आशंका जताई कि लंबे समय तक कचरा जमा रहने से मच्छरों और अन्य कीटों की संख्या बढ़ सकती है तथा जनस्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। प्रशासन पहुंचा कचरा उठाने, विरोध के बाद लौटा रविवार रात प्रशासनिक टीम पुलिस बल के साथ करनाल रोड पर कचरा उठाने पहुंची। मौके पर एसडीएम संजय कुमार, जिला पालिका आयुक्त और नगर परिषद के अधिकारी मौजूद रहे। प्रशासनिक अमले ने हनुमान वाटिका के समीप कचरा हटाने की कार्रवाई शुरू की और इसके बाद जाट स्कूल के निकट भी कचरा उठाने का प्रयास किया। हड़ताल पर बैठे सफाई कर्मियों को इसकी जानकारी मिलने पर वे मौके पर पहुंच गए और कचरा उठाने की कार्रवाई का विरोध किया। प्रदर्शन के दौरान जेसीबी चालक को काम रोकने के लिए कहा गया। विरोध के बाद प्रशासनिक टीम को कार्रवाई रोककर वापस लौटना पड़ा। सफाई कर्मियों का कहना है कि उनकी मांगों का समाधान किया जाए तो वे स्वयं सफाई व्यवस्था संभालने के लिए तैयार हैं। कई स्थानों पर कचरे में आग लगाने की घटनाएं शहर में बढ़ते कचरे को लेकर लोगों का आक्रोश भी बढ़ता दिखाई दे रहा है। सोमवार सुबह नगर परिषद कार्यालय के सामने जमा कचरे में आग लगाए जाने की सूचना सामने आई। छात्रावास रोड क्षेत्र में भी कचरा जलाने की घटना बताई गई। हालांकि, कचरा जलाने से निकलने वाला धुआं और प्रदूषण स्थानीय लोगों के लिए अतिरिक्त परेशानी पैदा कर सकता है। बाजारों और प्रमुख मार्गों पर बढ़ी परेशानी व्यापारियों के अनुसार छात्रावास रोड, रेलवे गेट बाजार, तलाई बाजार, सराफा बाजार, जनता मार्केट, सदर बाजार, सब्जी मंडी रोड, भगत सिंह चौक मार्केट और रेलवे स्टेशन मार्ग सहित कई क्षेत्रों में कचरा जमा होने से लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कई स्थानों पर राहगीरों को दुर्गंध के कारण मुंह ढककर निकलना पड़ रहा है। कचरे के ढेरों के आसपास बेसहारा गोवंश और आवारा पशुओं के पहुंचने से भी स्थानीय लोगों की चिंता बढ़ी है।

उपलब्ध जानकारी के अनुसार, हड़ताल के दौरान जिले में बड़ी मात्रा में कचरा जमा हो चुका है और शहर में नए अस्थायी कचरा प्वाइंट भी बढ़ गए हैं। नगर परिषद कार्यालय बंद, जनसेवाएं प्रभावित

हड़ताल का असर नगर परिषद कार्यालय के नियमित कामकाज पर भी पड़ा है। कार्यालय संबंधी कार्य प्रभावित होने से लोगों को जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र, संपत्ति कर, दस्तावेजों में त्रुटि सुधार तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों के लिए परेशानी उठानी पड़ रही है। इसके अलावा विभिन्न विकास कार्यों से संबंधित प्रक्रियाएं और सरकारी योजनाओं से जुड़े कुछ कार्य भी प्रभावित होने की बात सामने आई है। नागरिक आवश्यक दस्तावेजों के लिए कार्यालयों के चक्कर लगाने को मजबूर हैं।

व्यापारियों ने उठाई सफाई बहाल करने की मांग

तलाई बाजार के व्यापारी सुरेंद्र सिंह ने कहा कि गंदगी के कारण व्यापार प्रभावित हो रहा है और बाजार बंद करने जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई है। उन्होंने प्रशासन और सरकार से जल्द समाधान निकालने की मांग की। व्यापारी अशोक ने कहा कि बाजारों में नियमित सफाई व्यवस्था बहाल की जानी चाहिए। वहीं दुकानदार अरुण के अनुसार कचरे और नालियों में जमा गंदगी से मच्छरों तथा दुर्गंध की समस्या बढ़ रही है, जिसका सीधा असर व्यापार और आमजन के जीवन पर पड़ रहा है।

प्रशासन ने पार्षदों से मांगा सहयोग

जिला पालिका आयुक्त कपिल शर्मा ने बताया कि वार्डों की सफाई व्यवस्था को लेकर पार्षदों के साथ बैठक की गई है।

मदुराई में पहली भव्य कांवड़ यात्रा

भारतार्थ खबर Bhaarataarth.com

मदुराई, 31 अगस्त 2026। तमिलनाडु के मदुराई में भगवान शिव की भक्ति और सनातन आस्था का अद्भुत दृश्य उस समय देखने को मिला, जब शहर में पहली बार भव्य कांवड़ यात्रा का आयोजन किया गया। पंचमुखी हनुमान मंदिर से शिवन कोविल तक निकली यात्रा के दौरान पूरे मार्ग में हर-हर महादेव और बम-बम भोले के जयघोष गूंजते रहे। रविवार, 30 अगस्त 2026 की रात्रि 12

बजे पंचमुखी हनुमान मंदिर प्रांगण से यात्रा का शुभारंभ हुआ। बड़ी संख्या में शिवभक्त केसरिया वस्त्र धारण कर कांवड़ लेकर यात्रा में शामिल हुए। श्रद्धालुओं के उत्साह और भक्तिभाव ने पूरे वातावरण को शिवमय बना दिया।

प्रवासी समाज के प्रवक्ता एवं संवाददाता दिनेश सालेचा के अनुसार, मदुराई में पहली बार आयोजित इस कांवड़ यात्रा को लेकर शिवभक्तों और प्रवासी समाज में विशेष उत्साह देखने को मिला। श्रद्धालु भगवान शिव के जलाभिषेक और पूजा-अर्चना के उद्देश्य से श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ यात्रा में सहभागी बने।

भजन संध्या और हनुमान चालीसा से हुआ शुभारंभ

कांवड़ यात्रा से पूर्व पंचमुखी हनुमान मंदिर परिसर में भजन संध्या आयोजित की गई। श्रद्धालुओं ने भक्ति गीतों का गुणगान किया तथा सामूहिक रूप से हनुमान चालीसा का पाठ कर भगवान हनुमान और भगवान भोलेनाथ का स्मरण किया। इसके पश्चात धार्मिक जयकारों के बीच कांवड़ यात्रा को विधिवत रवाना किया गया। मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और पूरा वातावरण भगवा रंग तथा शिवभक्ति से सराबोर दिखाई दिया। शिवन कोविल पहुंचकर किया जलाभिषेक यात्रा विभिन्न मार्गों से होते हुए मदुराई स्थित इननम्मै थरुवर शिवन मंदिर पहुंची। यहां श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का जलाभिषेक कर पूजा-अर्चना की और धार्मिक विधि-विधान के साथ यात्रा का समापन किया। पूरी यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं के हाथों में भगवा ध्वज, कंधों पर कांवड़ और मुख पर भगवान शिव के जयकारे इसकी विशेष पहचान बने रहे। युवाओं सहित विभिन्न समाजों के श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और धार्मिक मयार्दा एवं अनुशासन का पालन करते हुए यात्रा को सफल बनाया। कार्यकताओं ने संभाली व्यवस्थाएं कांवड़ यात्रा को सफल, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने में अनेक कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। व्यवस्थाओं में शंकर सिंह राजपुरोहित, विक्रम प्रजापत, रमेशकुमार चौधरी, अशोक प्रजापत, भंवरलाल घांची और भगाराम प्रजापत सहित मदुराई के विभिन्न समाजों के कार्यकताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शहर के विभिन्न समाजों और संस्थाओं के गणमान्यजन भी इस अवसर पर उपस्थित रहे। उन्होंने कांवड़ यात्रियों को शुभकामनाएं देते हुए धार्मिक आयोजन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की। मदुराई में पहली बार आयोजित इस भव्य कांवड़ यात्रा ने भक्ति, सेवा, सामाजिक सद्भाव और सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया। भगवान शिव के जयकारों से गूंजती यह यात्रा श्रद्धालुओं के लिए आस्था और भक्ति का यादगार अवसर बन गई। समाचार स्रोत एवं संवाददाता: दिनेश सालेचा, मदुराई, तमिलनाडु

इस्लाम पर बयान से घिरे मंत्री, दी सफाई

भारतार्थ खबर
Bhaarataarth.com

कोप्पल/बेंगलुरु, 31 अगस्त 2026। कर्नाटक के उच्च शिक्षा मंत्री बसवराज रायारेड्डी का इस्लाम धर्म को लेकर दिया गया बयान राजनीतिक और सामाजिक चर्चा का विषय बन गया है। उनके कथित बयान के वायरल होने के बाद भाजपा और कुछ हिंदू संगठनों ने इसकी आलोचना की, जबकि मंत्री ने बाद में सफाई देते हुए कहा कि उन्होंने किसी अन्य धर्म को कमतर बताने का प्रयास नहीं किया और सभी धर्म महान हैं।

मामला कर्नाटक के कोप्पल जिले के कुकानूर में आयोजित एक कार्यक्रम से जुड़ा बताया जा रहा है। पैगंबर मोहम्मद के जन्मदिन के अवसर पर मुस्लिम समुदाय के लिए आयोजित सामूहिक विवाह समारोह में मंत्री ने धर्मों के अध्ययन और उनके सिद्धांतों को समझने की आवश्यकता पर अपने विचार रखे।

कुरान के अध्ययन और हज यात्रा की इच्छा का किया उल्लेख

मंत्री बसवराज रायारेड्डी ने अपने संबोधन में कहा कि इस्लाम के संबंध में अनेक गलतफहमियां मौजूद हैं और वे कुरान का अध्ययन करने के इच्छुक हैं। उन्होंने विभिन्न धर्मों के इतिहास और उनके सिद्धांतों का अध्ययन करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

उन्होंने हज यात्रा पर जाने की इच्छा का भी उल्लेख किया। अपने वक्तव्य में मंत्री ने कहा कि वे धर्मों को समझने और उनके मूल विचारों का अध्ययन करने में रुचि रखते हैं।

इस्लाम को वैज्ञानिक धर्म बताने पर बढ़ा विवाद

अपने संबोधन के दौरान मंत्री ने इस्लाम में मौजूद मानवीय मूल्यों और सिद्धांतों की सराहना की। उन्होंने कहा कि किसी भी व्यक्ति को धार्मिक कट्टरता या जातिवाद का समर्थन नहीं करना चाहिए और सभी धर्मों में अच्छे सिद्धांत मौजूद हैं।

हालांकि, उनके बयान का एक हिस्सा सोशल मीडिया और राजनीतिक हलकों में तेजी से चर्चा में आया, जिसमें इस्लाम को अन्य धर्मों की तुलना में श्रेष्ठ बताए जाने का दावा किया गया। इसके बाद विपक्षी भाजपा और कुछ हिंदू संगठनों ने मंत्री के बयान पर आपत्ति जताई। भाजपा ने की माफी की मांग

नेता प्रतिपक्ष आर. अशोक सहित भाजपा नेताओं ने मंत्री के कथित बयान की आलोचना की और उनसे सार्वजनिक रूप से स्पष्टीकरण तथा माफी की मांग की। भाजपा नेताओं का कहना है कि किसी भी धर्म की तुलना करते समय सार्वजनिक पदों पर बैठे लोगों को संवेदनशीलता और संतुलन बनाए रखना चाहिए। भाजपा की ओर से यह भी मांग उठाई गई कि यदि मंत्री अपने बयान पर स्पष्ट रुख नहीं अपनाते हैं तो मुख्यमंत्री से इस मामले में उचित कार्रवाई की जाए।

मंत्री बोले–सभी धर्म महान हैं

विवाद बढ़ने के बाद बसवराज रायारेड्डी ने अपने बयान पर सफाई दी। उन्होंने कहा कि उनके वक्तव्य को संदर्भ से अलग करके प्रस्तुत किया गया। मंत्री ने स्पष्ट किया कि उन्होंने इस्लाम में मौजूद कुछ महान मूल्यों और विचारों की सराहना की थी, लेकिन किसी अन्य धर्म को कमतर या बुरा नहीं बताया।

उन्होंने कहा कि सभी धर्म महान हैं और कोई भी धर्म बुरा नहीं है। मंत्री के अनुसार, किसी धर्म के अच्छे सिद्धांतों की प्रशंसा करने का अर्थ दूसरे धर्मों की आलोचना करना नहीं है। उन्होंने मीडिया से भी अपील की कि किसी भी बयान की समीक्षा करते समय उसके पूरे संदर्भ को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

बयान और सफाई के बीच राजनीतिक बहस तेज

इस मामले ने कर्नाटक की राजनीति में धर्म और सार्वजनिक बयानों को लेकर एक नई बहस छेड़ दी है। जहां विपक्ष मंत्री के मूल बयान पर सवाल उठा रहा है, वहीं मंत्री का कहना है कि उनके विचारों को गलत अर्थ में लिया गया। विवाद के बीच अब राजनीतिक दलों और सामाजिक संगठनों की प्रतिक्रिया पर नजर बनी हुई है। मामले में मंत्री की सफाई के बाद भी बयान को लेकर चर्चा जारी है।

Printed Published & Owner by Dhanna Ram Choudhary And Printed at MNS Printers Pvt. Ltd., No.345/4, Bhattarahalli, Old Madras Road, Bengaluru Karnataka-560049. And Published at "Maruthi"Plaza"", No. 10/1, 1st Cross Road, 3rd Floor , Oil Mill Road, Arvind Nagar , Maruthi Seva Nagar Post, Kammanahalli, Bengaluru Urban, Karnataka -560033, Editor Dhanna Ram Choudhary , For Editorial 91641 17755, Advertisement 88676 89130 , RNI No. KNHIN/2026/A5540. E-Mail: news@bhaarataarth.com, Website: bhaarataarth.com, Established: 2026